किंकरना भक्तिपुष्पोनु पुष्प वीसमु



कर्ता

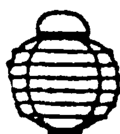
भिक्षुक किंकरदास

भिक्षुक पर्णकुटी, फतासानी पोळ

नवि पोळ-अमदावाद.

विजयादशमी - १९९७

प्रत १०००



आभार

पालणपुरनिवासी स्वर्गस्थ डोक्टर
अमुलखभाइ धरमचंदभाइ
कोठारीनां सुपुत्री बाळाबेनना
स्मरणार्थे मारा एक मित्र
तरफथी आ पुस्तकना
प्रकाशनमां रुपीआ
सवासो भेट मळ्या
छे. जेओश्रीनो
हुं आ स्थळे
पुनः पुनः
आभार
मानु छुं

भिक्षुक
किंकरदासना
सविनय वंदन

आध्यात्मिक सरिता

(शिखरीणी.)

वहो गंगा क्यांथी नयन निरखे पंथ ए ना जणायो
विविध मानव आवी स्नान करतां देह पावन बनायो
[illegible] भटकी पथ भूलेलां पंखीडां गान गावे
अनन्त शांति छाया रमण करतां भक्तिनी नींद आवे
अरे आ शुं! आ शुं? रवि प्रकाश्यो! दिव्य रोशन झगायां
[illegible] जोतां जगतभरनां पक्षीओ त्यां भरायां
[illegible] देखो अवनव रीते प्यास मननी छीपावे
[illegible] सरिता स्नान करतां आत्ममां सुख पावे

ऊर्मिओ

अर्बुदगिरिराजना गगनचूंबी शिखरो अने विकराळ अरण्योमां, संसारीक व्याधिओने विरामी, अविचळ मस्तीमां निजानंद लूंटतां हास्यवेरता मुखारविंद अने नयनोना अद्वैत प्रकाशे आकर्षित करतो एक अवधूत, मुक्तिना पंथे विचरतां जगतभरने UNIVERSAL LOVE विश्वप्रेमनी अमोली वानगी पीरसी रह्यो छे.

मानवमुसाफरोनां जुथ ए अवधूतनी पर्णकुटीमां उलटे छे.

जीवनक्षुधाने संतुष्ठ करवानी विविध सरणीए हरेक पोतपोताथी पाचन थइ शके तेवा प्रकारनी वानगीओ प्रतिपादन करे छे.

आत्मभावना के मायावि वांच्छना ! एतो पोतपोताना निश्चयेज सरजायां छे.

हुं जेटलुं पाचन करी शक्यो तेनीज आ नोंध छे.

आ तके मारा आत्मप्रिय शेठ श्री वकील हिंमतलाल प्रभाशंकर शुकलनो आभार ना भूलु.

साहित्यकारनी कक्षाए नहि आलेखतां केवळ भक्तिनीज मस्ती छे, एम समजी भुल बदल वांचको क्षमा अर्पे एटलीज अभ्यर्थना साथे विरमु.

भिक्षुक

किंकरदास

अविरत आश्रम

राग-खमाज-धूमाळी (वैष्णव जन तो तेने कहीये)

आश्रम अविरत खोल्युं मनवा अविकारी नर आवो रे
ब्रह्मदशामां बिंगल बाजे नाद सुणी हरखावो रे

अजर अमर सुखधाम बगीचो सोहम सोहम वासे रे
घटमंदिर जो साफ बने तो जन्म जरा दुःख नासे रे

मुक्तिपंथे कोक सुकानी वीरला धून धखावे रे
जगबंधनने जडथी तोडी अविनाशी पद पावे रे

भक्तिसुधा अंतरमां रेली निजनु कोण पीछाणे रे
मोहमिनारा मान भूलावे चाल्या कंइक मशाणे रे

श्रवण करेथी नहि समजातुं क्षणमां भान भूलातुं रे
आतमश्रद्धा अविचळ मंदिर जयजय तान मचातुं रे

जग जाणे ए खेल तमाशा सत्य दशा नहि जागे रे
मान धर्युं ए म्हेल नहि छे तीर हृदयमां वागे रे

अविकारी नर कोक जगतमां निशदिन प्रभुगुण गावे रे
निरख योगी नाथ चरणमे नैयां नित्य झूलावे रे



समर्पण

आत्मसमाधिना अविरत

क्षेत्रमां जेओश्री अमर

मनाया छे अने वर्तमान

काळमां सदेहे विचरता

दिव्यात्माओनेज

आ पुस्तक

समर्पण



भिक्षुक

किंकरदासना

कोटानुकोटी वंदन

विषय–सूचन



–: भूलसुधार :–

" श्री शेत्रुंजय तिर्थ संबंधमां पृष्ठ १०८ उपर आठमी लीटीए "श्रीमान गुलाबचंदजी ढढ्ढा साहेबे " छे. ते बदल अहीं करेल सुधारा मुजब वांचवुं.

श्रीमान गुलाबचंदजी ढढ्ढा साहेब, कलकत्तानिवासी मर्हुम रायबहादुर बद्रीदासजी शेठवाळा, शेठ रायकुमारसिंहजी, आगरानिवासी मर्हुम शेठ लक्ष्मीचंदजी वैद्यना पुत्र मोहनलालजी तथा अन्य प्रतिष्ठित गृहस्थोए प्रस्तुत संदेशो पाठवेलो."

धर्माचार्य दर्शननिधी स्वामी रामदास एम. ए.

दक्षिण आफ्रिकाथी आपणा देवांशी संतने लखे छे के:-

ओ लॉर्ड! ओ प्रभु! आपने मळवुं ते आ जगतना तमाम पवित्र तत्वोने मळवा बराबर छे. आप एक छो! आप अनंत छो! आप शिव छो! आप कृष्ण छो! आप देव छो! आप निर्गुण छो! आप सगुण छो! आप सत्य छो! आप पवित्र छो! आप उच्च छो! आप सर्वस्व छो! अने ते सर्वथी पर ते पण आप छो!

आपने पुन्य नथी लागतुं, तेमज पाप पण नथी लागतुं. आपने ओळखवाने माटे लाखो जन्मनी जरुर छे. जो आपनी कृपा थाय तो स्हेजमां आपने ओळखी शकाय! आपना जे वचनो छे तेमां तमाम शास्त्रोनो समावेश छे. आ जगतना कल्याण माटे अद्रश्यथी आप जगतनी चोतरफ दिव्य संदेश पहोंचाडी रह्या छो. You are Higher of The Higher & GOD of The Gods. आप सत्-चित्-आनंद स्वरुप परमात्मा-परब्रह्म छो.

Swami Ramdas M. A.
DHARMACHARYA DARSHANANIDHI
South Africa.



पाणी तथा भोजननो चमत्कारीक पुरवणी

अल्लाहाबाद लीडर पत्रना ता. १५–७–३५ सोमवारना अंकमांना अंग्रेजी लखाण उपरथी गुजराती भाषांतर.

मारवाडमां आवेल एरणपुरा नजीक विसलपुर गाममां जैन धर्मने लगती धार्मिक क्रियाओ करवामां आवी हती. (प्रतिष्ठा उत्सव) जे वखते हजारो जैनो तथा बीजाओए हाजरी आपी हती.

आ प्रसंगे जैन धर्मना इतिहासमां नोंधवा लायक बनाव बन्यो हतो.

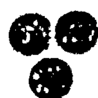
आ गामडामां उनाळाना समये दरेक साल पाणीनी तंगी पडती. जेथी आ समये पण आटली बधी मानवमेदनीने पाणी पुरुं पाडवाना उपाय शोधवा माटे गामना लोको चिन्तातुर बन्या हता.

आ सर्व क्रियाओ आबू पर्वतनी प्रख्याती वाळा विश्वोत्पादक, योगीराज आचार्य सम्राट, जगतगुरु योगीन्द्रचूडामणि गुरुश्री विजयशांतिसूरीश्वरजी–महाराजना शुभ हस्ते थवानी हती. गाम लोको गुरुदेव भगवाननी पासे गया योगीराजे खात्री आपी के त्हमारे चिंता करवी नहि.

योगीराज विसलपुरमां पधार्या बाद पाणी पुरु पाडवानी चिंता संपूर्ण रीते नाश पामी हती अने संभवे नहि तेवी जग्याओए पण पाणीनी भरती थई.

सर्व क्रियानी समाप्ति सुधी अखूट पाणी मळ्या कर्युं. रांधेली रसोईमां गणत्री करतां वधारे मानवीओ आवी जतां छतां खूटवाने बदले खोराक वधी पडतो दरेकने मानवुं पडतुं. के आ बधुं कोई दैवी हाथोथी ज थाय छे.

एकत्र थएल मानवसागरे मुर्शीदाबादवाळा-जगतशेठनी आगेवानी हेठळ जैनधर्ममां युगप्रधाननी महान पदवी छे ते योगीराजने एनायत करी.



युरोपना स्वीटझरलेन्ड देशना

योगप्रेमी मी. जोर्जे झुटझेलर कहे छे केः-

विश्वना सर्वोपरी योगेश्वर जगतगुरु आचार्य सम्राट श्री विजयशान्तिसूरीश्वरजी भगवानना परम पवित्र चरणकमळमां हुं मारा आत्माने विशुद्ध थवा अर्थे विनयपूर्वक नमस्कार करीने धरु छुं.

सर्व योगोमां राजयोग के नैसर्गिक योग ए उच्चमां उच्च छे. व्यक्तिगत आत्माने सीधे सीधो परमात्मामां तदाकार जोडवाथी मोक्ष के मुक्तिने पमाय छे.

सद्गुरु भगवाननी सर्व आज्ञाओनु पालन करीने, हृदयना सर्व भावोनु तेमना उपर प्रेमपूर्वक सिंचन करीने अस्खलीतपणे तेमनी सतत भक्ति करवाथी आपणामां सद्गुरु भगवाननी

प्रसादी उतरती जणाशे अने मुक्तिनो साक्षात्कार (जीवन्मुक्त दशानो अनुभव) थतो जशे.

हे प्रभु ! एक जीवात्मा करोड भवे पण तने भाग्येज ओळखी शके छे. परंतु तारी करुणा मात्रथी तो एक क्षणमांज तने ओळखी शकाय.

त्हारां वचनामृतो ए सर्व शास्त्रोना नवनित रुप सत्व छे. विश्वप्रेम एज त्हारो धर्मग्रंथ छे. ज्ञाती संप्रदाय के राष्ट्रियताथी पर रहीने सर्वनो समभावे सत्कार करे छे.

पाश्चिमात्य तत्वज्ञानीओ तथा सुसंस्कारीत साक्षरोने विश्वना आ सर्वोपरी योगेश्वरना पवित्र चरणकमळमां विनयपूर्वक झुकवा आवतां में प्रत्यक्ष जोया छे.

आथी हुं मारा सर्व प्रेमाळ मित्रो, पर्यटन करवा निकळेला बंधुओ तथा संशोधक विद्वानोनु हर्षपूर्वक ध्यान खेंचु छुं के:—सद्गुरु भगवानना, प्रेम, विनय अने भक्तिपूर्वक दर्शन करीने तेमना आशिर्वाद मेळववाथी, मात्र आ एकज स्थळे तेओनो विश्वपर्यटननो उद्देश सफळ थशे.

George Jutzeler.
SWITZERLAND EUROPE.



अमेरीकाना न्युयोर्क शहेरना

"ट्रीव्युट हेरोल्ड" पत्रना तंत्री मीस माइकल पीम कहे छे के:-

में दुनियाना दरेके दरेक देशनी मुसाफरी करी छे अने घणा महान पुरुषोने हुं मळी छुं, अने छेवटमां पूज्य गुरुदेव महाराज शांतिविजयजीने पण मळी. अमारा पाश्चिमात्य लोकोमां एटलुं तो ठीक छे के अमो बराबर समजीनेज मानीये छीये. अमो अमारा मनने पुछीए छीए के "शंका" दरेक वस्तुमां शुं छे? मीस मेयोए "मधर इन्डीया" नामनी जे चुक लखी छे तेमां लखतां एणे मोटी भूल खाधी छे, कारण के हिंदमां हजीए आवा देवरत्नो छे तो पछी एणे शुं बुद्धिथी ए पुस्तक लख्युं हशे? हवे तो हुं एने बराबर जवाब आपीश एटले एनी भूल समजाशे अने जगत सत्य वस्तु सारी रीते समजी शकशे.

Guruji is GOD; no doubt.

(निःशंक गुरुजी परमेश्वरज छे.)

Miss Michael Peem.

EDITOR "TRIBUTE HEROLD"
NEW YORK, U. S. A.



આંગ્લ વિદુષી એલીઝાબેથ શાર્પ કહે છે કેઃ–

પરમપૂજ્ય ગુરુદેવ ભગવાનશ્રી શાંતિવિજયજીનાં દિવ્ય ચક્ષુઓ નૈસર્ગિકપણેજ વિરાટ અને ભવ્ય છે. તેઓશ્રીનાં નયનો આપણી સામે ફરતાંજ આપણા અંતરનાં છુપા સંકલ્પ-વિકલ્પો ઝડપી લેતા હોય તેવોજ ભાસ થાય છે. તેઓશ્રીની ત્વચા શ્યામ હોવા છતાં ધ્યાનસ્થ દશામાં રમણ કરતાં ત્વચાના રંગની અનેક છાયાઓ બદલાઇને દિવ્યરુપ દેખાય છે. આ દ્દષ્ટીવિષયક ચમત્કાર મેં પ્રત્યક્ષ અનુભવ્યો છે. સંસ્કૃતમાં "તારક બિન્દુ" નામે ઓળખાતું તેજનું એક દિવ્ય બિન્દુ તેઓશ્રીના એક ચક્ષુથી બીજા ચક્ષુએ ફરતું ઝબકારા મારતુ સ્પષ્ટ જોઇ શકાય છે. યોગની ભાષામાં બે પાંખડીનું કમળ કે જે "આજ્ઞાચક્ર" કહેવાય છે તેની છાયા તેઓશ્રીના ભાલ પ્રદેશમાં દ્રષ્ટીગોચર થાય છે.

Elizabeth Sharpe



पोर्च्युगीझ तत्ववेत्ता, अने संशोधक डोक्टर जोस रोड्रीग्से "इलस्ट्रेइटेड वीकली" तथा दिल्हीना अठवाडीक "नवयुग" ना ता. १२-७-३५ ना अंकमां आपणा देवांशी संतना फोटा साथे छपावेल अंग्रेजीनुं गुजराति भाषांतर.

महान योगीराज श्री विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराज प्राचीन योगक्षेत्रना सूर्य समान पथदर्शक छे. योगीओ आत्मशक्तिथी चमत्कारीक देखाता बनावो बतावी शके छे के जेने सामान्य एकान्तिक जनता जादु इलम के जंत्रमंत्र माने छे. परंतु वस्तुतः तेमां जादु इलम के जंत्रमंत्र नथीज. योगथी प्रगटती आत्मशक्तिथी अशक्य देखातुं बधुं शक्य बनी शके छे.

Dr Jose Rodrigues

PORTUGUES PHILOSOPHER & EXPLORER



लाला लजपतरायना उर्दू वंदेमातरम् पत्रमांथी.

टुंक नोंध.

दुनियामां महान आदर्शमां आदर्श पुरुष होय तो ते एक शांतिविजयजी ज छे.

कुदरती शक्तिओ खरेखर पूज्य गुरुदेव शांतिविजयजीने ज प्राप्त थई छे.

जो मनुष्य गुरुजीनो खरेखरो दावो करी शके तो शांतिविजयजी ज खरेखरा गुरुजी कही शकाय.

ॐ

देवांशी संत या तारणहार

ध्यानमूलं गुरुमूर्ति पूजामूलं गुरुपदः ।
मंत्रमूलं गुरुवाक्यं मोक्षमूलं गुरुकृपा ॥

दुंदुभी

ओ! मातृभूमी गुणगान करुं शां शां त्हारां सन्मान
कंइक वन्या बळवान अविरत अमृतरसनां पान
स्वराज्य साचुं क्यां सरजायुं सत्याग्रह शुभ नाम
आत्मसमाधि अविचळ भासे मुक्तिपुरीनु धाम—करुं.
कर्म धर्मनी न्यारी घटना त्याग मोह ने राग
केम पराजय थाय कर्मनो विरल विभूति जाग—करुं.
स्वराज्य लीधुं आत्मसमीपे सुरंग सत्य भिमान
प्राणीमात्रने दुःख ना दीसे दैविकतानु भान—करुं.
सत्याग्रह संग्रामे विरला भाग्यां भवनां दुःख
निजानंदमां महासुख मानी वाध्युं आतम सुख—करुं.
दुनियाभरमां नोवत वागी नवखंडे सैनिक
हुकम थतां पडता मयदाने मायानी नहि भीत—करुं.

कृष्ण कनैयो भक्त मीरांने नरसिंह व्हाला बाल
वीरप्रभु जगवंदन जीनवर मातृभूमी रखवाळ-करूं.

स्वराज्य खातर ज्योति जगवी जगव्यो भारत देश
सत्याग्रह कर्मोनी साथे मीत नहि लवलेश-करुं.

क्राइष्ट अने जरथोस्त गवाया रहेम करी रहेमान
कुरान ने बाइबलना पाने अति लख्यां गुणगान-करुं.

आज दीसे नहि झांखी एनी उलटी जगनी रीत
स्वराज्यना बहाने सपडाता जुठी जगनी प्रीत-करुं.

छतां अमारा भाग्य उदयने पुन्य प्रकाश छवाय
मातृभूमीनो मोंघो दीपक योगी नाम गवाय-करुं.

आत्मसमाधि सत्याग्रहने पर्वत केरी टोच
अरण्य ने अर्बुदना पहाडे संकटनो नहि शोच-करुं.

क्षमा अने शांति हथीयारो ध्यान अनेरी टेक
स्वराज्यनो ए साचो साथी तुंही तुंही मन एक-करुं.

शांतिविजय शुभनाम धरावे विश्व प्रेम संदेश
भक्तिसुधामां स्नान करावी टाळे जगनो क्लेश-करुं.

बाह्यस्वरुपे न्यारो भासे अविचळ पंथ मनाय
स्वराज्यना साचा सैनिको नित्ये पडता पाय-करुं.

भक्तिभावने प्रेम भीरुनो निश्चय ए पयगाम
सत्याग्रहना अविरत पंथे किंकरनो संग्राम-करुं.

भारतवर्षमां हजु पुन्यनो प्रकाश छवायो नथी, परंतु तेना चीरस्मरणिय इतिहासने उज्वळ बनावे तेवा दिव्य पुरुषो हजु भारतना भाग्यवंत मिनारे यशस्वी छे.

शीतनो झरो अतुल वेगे रेलायो छे. जेना पवित्र पानथी दुनियाना अनेक मुसाफरोए, कर्माग्निनी ज्वलंत भठ्ठीमां भीतरनी आग बुझावी असीम वेदनाओमां शांतिसुधा रेली छे!

क्यां ?

अहो! मरुधर देशनी पवित्र भूमिमां आजे एक अलौकीक तान मची रह्युं छे. एना आंगणे आजे एक दिव्य प्रेमनो सागर उभरायो छे. विश्वना चारे खूणामां वसता मानवो ए सागरमां स्नान करवा आनंदमुग्ध बन्या छे. केटलाक स्नान करी पोताना आत्माने पवित्र बनावे छे तो केटलाक लांबा समयनी तृषा छीपावी हृदयने संतुष्ठ करे छे.

अरे! आवी अद्‌भूतता बतावनार महान विभूती कोण छे ? एना नामथी भारतवर्षमां आजे कोइ पण अजाण नथी.

तेओश्रीनु शुभ नाम महानयोगी गुरुदेव भगवंत श्रीमद् विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराज अने तेओना गुरु तपस्वी महात्माश्री तिर्थविजयजी महाराज अने तेओश्रीना गुरु योगेन्द्र महात्मा गुरुदेव भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजी महाराज.

जैन धर्म ए विश्वनोज धर्म छे. भगवान श्री महावीरे जगतना कल्याणार्थेज आत्मरोशनी प्रगट करी हती. भगवान श्री महावीरना पट्टधरशिष्य गौतम गणधर पण ज्ञातीना ब्राह्मण हता. भगवान श्री महावीरना समयमां तेमज काळधर्म बाद पण जैनेतर प्रजामांथी जन्मेल महात्माओए जैन धर्मनी विजयपताका वगाडी छे.

जेवा के ... हरिबळ मच्छी ज्ञातिना चंडाळ हता, मेतारज मुनि ज्ञातिना ढेड हता, सिद्धसेन दिवाकर, बपभट्टसूरीजी, कळीकाळ सर्वज्ञ मनाता हेमचन्द्राचार्य आदि अन्य ज्ञातिओमांथीज जन्मेल महात्माओए जैन धर्मने देदीप्यमान बनाव्यो छे.

प्रस्तुत कथन मुजब आ विभूतीओनी संस्कृति चाली आवे छे. गुरु, गुरुना गुरु, अने दादागुरु ए आहिर (क्षत्रिय) कोमनाज अमोलां रत्नो छे. दादागुरु महान प्रभावशाळी अने समर्थ आत्मज्ञानी हता.

"धन्य हो ! ए मरुधर देशने
अने धन्य हो ! ए आहिर कोमने"
"धन्य हो ! ए मांडोली गामने
अने धन्य हो ! ए मणादर गामने"
"धन्य हो ! ए देवांशी वसुदेवी माताने
अने धन्य हो ! ए पुण्यात्माश्री भीमतोलाजीने"

मरुधरनी महत्ता

वसंततिलका

मरुधर तणा मिनारे शुभ ज्योत भासे
जीनमंदिरो झगमगे दवला प्रकाशे
आहा ! अनुप रचना जीन चैत्य केरी
मरुधर तणी निरखशो कीर्ति अनेरी.

मरुधर एटले मारवाड. चालु युगने निहाळतां त्यांनो लोकसमुह परदेशमां वेपार करतो होवाथी मारवाडना आंगणे स्थायी वसतो लोकसमुह ओछा प्रमाणमां निरखी शकाय छे. परंतु एना पूर्वगामीओनी अजोड कीर्तिना मिनारा मारवाडनी अटेरीए यशस्वी छे.

मारवाडनी अटेरीओना उंडा स्वरुपनु जेने भान हशे अगर जेणे मारवाडनी ए अनुपम रचनाओ निहाळी हशे तेओना मनोमंदिरमां अवश्य ख्याल हशे के एनी मनोरमा अने सौन्दर्यता जीनप्रासादोनी अनुपम अने विशाळ रचनाओ साथे अपूर्व भाव उल्टे एवी श्री जीनेश्वर देवनी प्रभावीक मुर्तिओ साथेनां जीनचैत्योनी झगमगती ज्योतथी भरपुर छे. लखलूट लक्ष्मीना खर्चे बंधावेलां जीनालयो के आजे मानव

एनी प्रतिभानु शुं अवलोकन करी शके ? हिंद भरमां एनी कीर्ति अजोड छे.

आबु देलवाराना अविचळ कीर्ति.

देलवाराना जीनप्रासादो के जेनु अद्भुत कळामय शील्प काम आजे विश्वभरमां मशहुर छे. हिन्दुस्तानना इतिहासमां पण आजे ए अपूर्व आलेखाय छे. एनी कारीगरीनो ताद्दश्य चितार वतावे तेवुं कोइ जीनमंदिर आजे हिंदुस्तानना आंगणे अस्तीत्वमां नथी.

वस्तुपाळ तेजपाळ अने श्री धवळराजाना मंत्री श्री विमळशाए करोडो रुपीयाना भोगे बंधावेल ए आबु देल-वारानां जीनप्रासादो बांधवामां ए श्रेष्ठीओए जळनी वरसती धारा मुजब द्रव्यनी रेली करी छे.

धन्य हो ! ए जैन समाजना साचा अने शूरवीर सुभटोने के जेओनां नाम अने उज्वळ कीर्तिओ आजे पण तेओना जीवननी अविचळ रुपरेखानु भान करावे छे.

अचळगढना जीनप्रासादो.

चौदसो चुमालीस मण सोनानी भरावेली जीन प्रतिमा-ओना झगमगता दिव्य प्रकाश साथे अनुपम अंजन करावतां ए जीन चैत्यो आबु पर्वतनी उंचामां उंची टेकरीए आवेलां छे, के जेनी प्रतिभा अने सौन्दर्यता आजे पण मानवना मनो-मंदिरने झगमगावी रही छे.

राणकपुरनी प्रतिभा

राणकपुरनु चौदसो चुमालीस थांभलानु देरासर के जेने बंधाववामां लखलूट द्रव्यनो व्यय करवामां आवेलो छे. ते जीनप्रासादनो पायो पुरवामांज अढळक द्रव्य रेलायुं छे. नादिया गामना श्रेष्ठी धना पोरवाले आ जीनप्रासाद बंधावी पोतानी कीर्ति अमर बनावी छे.

शिरोही नगरीनी अपूर्व रुपरेखा

शिरोही नगरीनां जीनप्रासादोने अडधा शेत्रुंजय तिर्थ तरीके मानवामां आवे छे. शेत्रुंजय तिर्थ उपर आवेली नव टुंकोनी जे अपूर्व रमणियता मानवना मनोमंदिरने आनंदमुग्ध बनावे छे एज रेखाचित्र आ जीनप्रासादोनां दर्शन करतां हरेक मानवना नयनो समक्ष तरी आवे छे. शिरोही नगरीनी प्रतिभा आ जीनप्रासादोथीज मशहुर छे.

श्री वामणवाडजी तिर्थ

शिरोही नगरीनी नजीक आ तिर्थ आवेलुं छे. शिरोही जतां सज्जनरोड स्टेशनथी मोटरमां बेसतां गाम झारोली मुकीने प्रथम आ तिर्थ आवे छे. स्टेट तरफथी चालती मोटर सरवीसनी जती अने आवती मोटरो यात्राळुओने दर्शन करवा माटे त्यां पांच मिनीटना आशरे रोकाय छे. वामणवाडजीथी आगळ वीरवाडा अने सांदवाडा गाम पछी शिरोही नगरी

आवे छे. शिरोही नगरी अने वामणवाडजी तिर्थ वच्चे आशरे पांचेक गाउनु अंतर हशे.

जैन इतिहास आजे श्रवण करावे छे के आ तिर्थ भूमीमां विश्वोद्धारक भगवान श्री महावीरना कानमां गोवाळीयाए खीला ठोकेला अने जे उपसर्ग महान कहायो ते उपसर्ग आ स्थळे उद्‌भवाय छे.

वामणवाडजी तिर्थनी आसपास बे गाउना अंतरेज गाम आवेलां छे. वामणवाडजी ए कोइ गाम नथी अगर त्यां कोइ पण मानवनी वस्ती नथी. जे जग्याए विश्वोद्धारक भगवान श्री महावीरे ध्यान कर्युं हतुं ते जगाए हाल पगलां छे, अने ते स्थान उपर हाल एक देरी बांधवामां आवेली छे. आजुबाजु भव्य धर्मशाळा अने बावन जीनालयनुं मनोहर अने रमणिय-तानां [illegible] करावतुं जीनप्रासाद आजे ए तिर्थनी अपूर्व प्रतिभानुं भान करावे छे. तेमज विश्वोद्धारक भगवान श्री महावीरनी वेळुनी प्रतिमा ए जीनप्रासादमां बिराजमान [illegible] आवेल छे जे प्रतिमानी अद्‌भूत अलौकीकता हरेक [illegible] दर्शन करतांनी साथेज अपूर्व भाव उलटावे छे.

आ [illegible] जीनप्रासादो [illegible] निष्कर्षार्थ पूर्व समयना जैन समाजनी [illegible] भाद छे.

[illegible] भूमीमांज आपणा देवांगी संते [illegible] महत्ता वधारी छे.

दादा गुरुनो जीवन दीपक

(शार्दूलविक्रीडीत छंद)

जेणे मनथी मोह मान मार्या तेने सदाये नमु
जेणे मनथी काम क्रोध वाळ्यां तेने सदाये नमु
जेणे मनथी राग द्वेष काढ्या तेने सदाये नमु
जेणे मनथी सर्व एक जाण्या तेने सदाये नमु

मरुधर देशनी परम पवित्र भूमीमां आजथी एक सैका पहेलां जोधपुर इलाकाना जसवंतपुरा परगणामां आवेला गाम मांडोलीमां एक रायकाश्री दरजोजी करीने वसता हता. मांडोली गाममां जैन देरासर अने उपाश्रय विगेरे आवेलां छे. दरजोजीने प्रजामां एक कोळोजी करीने पुत्र हतो. पोताना कुटुम्बमां आ पुत्रने जीवंत मुकी दरजोजी देहोत्सर्ग पाम्या हता. कोळोजीनो जन्म संवत १८४८ ना अषाड सुद पुनमने रोज थयो हतो. कोळोजीने बाल्यवयथीज ईश्वरभजन अने प्रभुभक्ति उपर महान श्रद्धा हती. ज्ञातीना आहिर होइ जीवन-निर्वाहनु साधन ढोरोना पालन पोषण उपरज हतुं. कोइ कोइ समय जंगलमां ढोर चारतां ईश्वरभजन थतुं श्रवण करवामां आवे तो तुरतज तेओ ते तरफ चाल्या जता. भजननी पुर्णा-हुती ना थाय त्यां सुधी त्यांथी पाछा फरता नहि. तेमज

ढोरोनी जरापण चिन्ता करता नहि, परन्तु प्रभुभक्तिमांज शुद्ध हृदये तलीन बनता.

एक समय मारवाडमां एवो सख्त दुकाळ पडयो के अन्नपाणी अने ढोरोने घास आदि मळवुं मुश्केल हतुं. तेवा समये तेओ उचाळो करी देशाटन करवा निकळी गया, साथमां केटलांक ढोर हतां ते खतम थइ गयां, अने प्रजामां एक, बे वर्षनो पुत्र जेनु नाम वेलराज हतुं ते जीवंत रह्यो. फरतां फरतां तेओ पुना पासे आवेला चोक गाममां आवी पहोंच्या. ते गाममां मारवाड प्रदेशमां आवेल थूळ गामना रहीश एक जैन ग्रहस्थ जस्राजी करीने रहेता हता, तेओने त्यां ढोरोनु पालन पोषण करवा कोळोजी पुत्र साथे नोकर तरिके रह्या. तेओनी अपूर्व प्रभुभक्ति निहाळी शेठे कोळोजीने नवकार मंत्र शीखव्या हता. कोळोजी हरेक समय ते ध्यानमां तलीन रहेता. नोकरीना त्रण वर्ष पुरां थतां दरम्यान एक समय पोताना पुत्र वेलराजने जंगलमां सर्प करडयो, करडतांनी साथेज पुत्र मरणने शरण थयो. कोळोजी ए पुत्रने खोळामां लइने एक वृक्ष नीचे वेसी गया अने अंतरमां एवी प्रतिज्ञा करी के "आ पुत्र सजीवन थाय तोज मारे अन्नपाणी ग्रहण करवां, नहितर नवकार मंत्रना ध्यानमां लय थइ मारा देहनो मारे पण त्याग करवो."

आ प्रतिज्ञाथी छुटवाने माटे घणा घणा लोकोए तेओने समजाव्या. पण एम करतां त्रण दिवस पुरा थवा आव्या. त्रीजा दिवसना उजवाणे पोताना ध्यानना प्रबळ प्रतापे कोइ

देव, महात्मानुं रुप धारण करी प्रत्यक्ष आवी उभा. तेओए पण कोळोजीने पोतानी प्रतिज्ञा छोडवा बाबत हरेक कसोटी कर्या बाद पुत्रने हाथ फेरवी सजीवन बनाव्यो. तुरतज कोळोजीए पोताना पुत्रने महात्माजीना खोळे मूक्यो अने कह्युं के आप एना जीवन पाळक बन्या माटे आप एने साथे लइ जाओ. नवकारमंत्रना ध्यान मात्रथी ज्यारे मारो पुत्र सजीवन बन्यो तो ते मार्ग मने आप बतावो के जेथी साधु-जीवन प्राप्त करी हुं मारा आत्मानु श्रेय करुं.

महात्माश्रीए प्रत्युत्तर आप्यो के आ पुत्रने तमो कोइ साधु अगर यतिने वोरावी देजो अने तमो पण अमुक समय बाद जैन दीक्षा अंगीकार करशो, अने आ जगतमां एक ईश्वरी अवतार तरिके पूजाशो एवो मारो तमने आशिर्वाद छे.

तुरतज महात्माश्री अद्रश्य थइ गया बाद कोळोजीए त्रण उपवासनु पारणु कर्युं. चारेक मास पछी पुत्र वेलराजने मुंबइमां एक यतिजीने वोरावी दीधो. जेओ वेलजी यतिना नामथी पालणपुर पासे आवेल गाम मंडारमां मशहुर हता. वेलजी यति आजथी चारेक वर्ष उपर गाम मंडारमां काळ-धर्म पामी गया छे.

पुत्र वेलराजने वोराव्या बाद कोळोजी साधुजीवन प्राप्त करवानी धगशमां खंडालाना घाटमां फरता हता. एक समय तेओए एक वृक्ष नीचे आसनस्थिर बनी एवी प्रतिज्ञा करी के

"कोइ मने साधु बनावे तोज मारे आ स्थान छोडवुं." त्रण दिवसना उपवास पुर्ण थतां पोतानी प्रतिज्ञाने फळीभूत करवा एक मणीविजयजी नामना साधु मळी आव्या. तेओनी पासे कोळोजीए संवत १८७३ना महा सुद पांचमने रोज जैन दीक्षा अंगिकार करी अने त्यारथी तेओनु नाम मुनी महाराज श्री धर्मविजयजी स्थापीत थयुं. महाराज श्री मणीविजयजी मळ्या तेमां पण कुदरतनोज संबंध हतो.

खंडालाना घाटमां अमुक समय व्यतित कर्या बाद महाराज श्री धर्मविजयजी पोताना जन्मस्थान गाम मांडोली-मां पधार्या. अज्ञान अवस्था होवा छतां तेओश्रीने कुदरती [illegible] संपादन थयुं. तेओश्री एटला बधा शक्तिशाळी पुरुष हता के एक स्थान पर बिराजमान होवा छतां एकज समये जुदा जुदा स्थानोमां दर्शन आपी शकता हता. जेठ मासना सखत तापमां पर्वतोनी टेकरीए धीखधीखती शीला उपर आसन [illegible] करी अपोरना बारथी चार सुधी ध्यानस्थ दशामां खुल्ला [illegible] सुर्यनां किरणो चक्षु द्वारा ग्रहण करता हता. [illegible] ठंडीमां नदी, माठा विगेरे स्थळोमां रात्रीनी [illegible] दशामां पसार करता हता. एक समय एवो [illegible] हतो के हस्ति गोचरी वोरावे तोज आहार [illegible] पुर्ण थया बाद पोताना अद्भूत [illegible] दरबारमां नट चडया. एक हल्वाइनी

दुकान पासे गांडो हस्ति सामेथी आवतो हतो, तेणे हलवाइनी दुकानमां सुंढ नाखी मोदक लीधो के तुरतज गुरुश्रीए सन्मुख पातरू धर्यु अने हस्तिए मोदक वहोराव्यो, बाद तेओश्रीए पारणु कर्युं.

एक समय रामसीण गामथी विहार करी आगळ विचरता हता, जेठ मासनो समय हतो, साथे घणाज माणसो हतां. रस्तामां सखत गरमी होवाथी साथे आवेल माणसो तृषातुर बन्यां. आसपास पहाड अने जंगल होइ पाणी मेळववानु कंइ पण साधन हतुं नहि जेथी माणसो गभरावा मांडया. जमीनमां एक वावडो करावी गुरुश्रीए पोतानी पासे तरपणीमां थोडुं पाणी हतुं तेमांथी थोडुं पाणी वावडामां नाख्युं अने ते उपर कपडु ढंकाववराव्युं, तुरतज जलाशय लब्धीना प्रभावथी वावडामां पाणी भरायुं ने बधा माणसो तृषा छीपावी शांत बन्यां.

नवकारमंत्रना ध्यानथीज तेओश्रीए सर्व सिद्धिओ प्राप्त करी हती.

नवकार केरा मंत्रथी ए सर्व सिद्धि पामीया
नवकार केरा मंत्रथी ए आत्मरसमां जामीया
नवकार केरा मंत्रथी ए वीर थइने म्हालीया
नवकार केरा मंत्रथी ए परम पदने पामीया

एक समय गुरुश्री रामसीणमां विराजता हता, चैत्र सुदी पूर्णिमानो दिवस हतो, सवारना दश वाग्या बाद जंगलमां

ध्यानमां पधारी गया हता, अने सांजना चार वागतां गाममां पाछा फर्या हता. तेज दिवसे रामसीण गामना केटलाक श्रावको पालीताणा यात्रार्थे गया हता. तेओए डुंगर उपर आदिनाथ भगवाननां दर्शन करी बहार निकळतां वृक्ष नीचे गुरुश्रीने जोइ वदन करी प्रश्न कर्यो के "बावजी आप क्यारे पधार्या?" प्रत्युत्तरमां "ॐ शांति" कह्युं. तेज दिवसे ते श्रावकोए रामसीण पत्र लखी दर्शाव्युं के "आजरोज अत्रे डुंगर उपर गुरुश्रीनां दर्शन थयां छे तो गुरुश्री रामसीणमां छे के विहार करी गया छे?" तेनो जवाब एवो मळ्यो के "चैत्र सुद पुर्णिमाना रोज गुरुश्री सवारना दश वाग्या बाद जंगलमां ध्यानमां पधारी गया हता ते सांजना चार वागे गाममां पाछा फर्या हता, अने हाल अत्रे बिराजमान छे."

आवी रीते तेओश्री पोताना आत्मबळ द्वारा अनेक स्थानोमां जइ शकता हता. मृत्युना बिछाने सुतेला मानवो तथा असंख्य मुंगा प्राणीओने अभयदान आपी बचावता. मात्र आशिर्वादथी असंख्य मानवोने पावन बनाव्यां छे. तेओश्रीना जीवन संबंधमां घणाज अद्‌भूत अने अलौकीक दान्ताओ छे, के जेनो लखवाथी पार आवी शके तेम नथी.

मृत्युनो समय पण एक मास अगाउथी जाहेर कर्यो हतो, अने दर्शाव्युं हतुं के "मारा मृतदेहने जे जग्याए अग्निसंस्कार करो ते जगाए पालखीनी आजुबाजु चार, लीमडाना सुका

खुंटा दाटजो, अग्नि प्रगटाववानी जरुर नहि पडे. शरीर उपरनां उपकरणो, ओघो, मुहुपत्ती कपडां विगेरे तथा पालखीनी धजा अखंड रहेशे. मात्र आ शरीरे जेवी रीते जन्म धारण कर्यो छे ते शरीरज वळीने भस्म थशे."

"लीमना जे चार खूंटा दाटशो ते पण बळशे नहि, परंतु अखंड रही भविष्यमां चार लीमडाना वृक्ष थशे. म्हारा काळधर्म बाद भविष्यमां कोइ महान आत्मा मारी पाछळ थशे त्यारे तेमांनु एक लीमडानु वृक्ष अदृश्य थइ जशे."

प्रस्तुत हकीकत मुजब संवत् १९४९ ना श्रावण वद छठ्ठने रोज प्रभातमां तेओश्री काळधर्म पामी गया. सहस्रगण्य मानवो जातिना भेदभाव वगर तेओश्रीनी पालखीने अग्निसंस्कार माटे जंगलमां लइ गया. लीमडाना चार खूंटा दाटी वचमां गुरुश्रीना मृतदेहनी पालखी विराजमान करवामां आवी, अने पालखीनी आसपास चंदननां लाकडां गोठववामां आव्यां इन्द्र महाराजाए पण ते समये अतिवृष्टी करी के जळनो पार रह्यो नहि. अग्नि आपोआप जमणा अंगुठामांथी प्रगट थइ, शरीर उपरनां उपकरणो पालखीनी धजा अने जमीनमां दाटेला लीमना चार खूंटा विगेरे अखंड रह्युं. मात्र शरीरज बळीने खाख थयुं. उपकरणो अने धजा लोको प्रसादी रुपे लइ गया.

गुरुश्रीना देवलोक पाम्या बाद जे जग्याए अग्निसंस्कार करवामां आव्यो हतो त्यां दाटेला लीमडाना चार खूंटाना

चार वृक्षो थयां. गुरुश्रीनी देरी सांडोली गामना पाळे करवामां आवेली छे, जे देरीमां गुरुश्रीनां चरण पधरावेलां छे. ज्यारे गुरुश्रीनी देवलोक पाम्यानी तिथी आवे छे त्यारे त्यां मोटो मेळो भराय छे, अने ते दिवसे दर्शन करवा आवनार हरेकने सांडोली गाम तरफथी जमण अपाय छे. ते दिवसे प्रभातमां गुरुदेवना चरणमांथी अमुक समय गंगाजळ वहे छे.

सांडोली तथा तेनी आसपासना गामना मानवो गुरुदेव भगवानना चरणने महान देव तरिके पूजे छे. कोइक समय गुरुदेवश्रीए देवलोक पाम्या बाद श्रद्धापूर्ण भक्तोने दर्शन पण आप्यां छे.

उपरनी तमाम वस्तुस्थिती हाल मोजुद छे. मात्र एक लीम हाल अदृश्य थइ गयो छे. तेओश्रीना अगाध गुणोनु वर्णन तथा दिव्यतानो पार पामी शकाय तेम नथी.

गुरुदेव भगवान श्रीमद् धर्मविजयजीना शिष्य तरीके महान तपस्वी महात्माश्री तिर्थविजयजी थया. तेओश्री पण जातीना आहिर हता. जन्मस्थान गाम मणादर हतुं. तेओश्रीए आखुंए जीवन तपश्चर्यामांज पूर्ण कर्युं हतुं. संवत १९८४ना फागण सुद आठमना रोज मारवाडमां आवेल गाम मुंडोतरामां तेओश्री काळधर्म पामी गया छे. जेओश्री आपणा देवांगी संतना गुरु अने संसारीकपणाना सगा काका थता हता.

ज्योतिनां किरणो

आपणा देवांशी संतनो जीवन प्रवाह

वसंततिलका

आहा वसंत आजे केवी खीली छे
आहा अति अवनवा पुष्पे वरी छे
जन्म्या अहो शुभदिने कुळचन्द्र भानु
आहिरना पुरवना पुन्ये थवानु.

जन्मस्थान अने समय

जन्मसमय संवत १९४५ना माघ सुद पांचम. स्थान मणादरनगर ईलाको शिरोही.

वसंतनी प्रतिभा

वसंत ऋतुनी पवित्र उर्मिओ मानवना अंतरपटमां हास्य पुरती हती. जंगलमां पहाडो अने वृक्षो पोतानु सौन्दर्य झगझगावी रह्या हता. कोयल कोकिल कंठे कर्णप्रिय मधुरा टहुकार करी रही हती. वसंतनां वधामणां आपतां वृक्षो गीचोगीच पांदडाथी लीली घटा पाथरी रह्यां हतां.

उषानी मंदमंद शितळ लहेरो अने झरमर झरमर प्रवाह रेलाता हता. मोर अने बपैयां तेना हृदयभेदक स्वरोथी गुंजार करी रह्यां हतां. मुरघो प्रभातना छेल्ला रणकारथी मानवने जाग्रृत करतो हतो. सन्नारीओ पोतपोतानी सखीओ साथे जळ भरवा कुवा तरफ सिधावती हती. वसंतनो तहेवार होवाथी मानवसमुहमां हर्षनां स्मित उभरायां हतां.

चालो ! चालो ! चालो ! आहिरना माढ तरफ जईए.

आहिरना वासमां प्रभातनो समय होवाथी सर्व कोई गौमाताने दोही दुध संकेलवाना कार्यमां गुंथायेला हता. सूर्यनारायण पोतानो प्रकाष फेलाववा मधरां मधरां किरणो फेंकी रह्यो हतो. पहो फाटवाना समयमां रायकाश्री भीमतोलाजीना आंगणे कोई भेदी गुंजार थई रह्यो हतो. आसपासना स्त्रीपुरुषो एकत्र थई ते तरफ प्रयाण करी रह्यां हतां. टुंक समयमांज वधामणी फरी के वसुदेवीनी कुक्षीए एक पुत्ररत्ननो प्रसव थयो छे. साधारण रीते विचारवामां आवे तो युगनो एवो प्रभाव छे के हरकोई ज्ञातीमां पुत्रनो जन्म थाय तो आनन्दमां वृद्धि थाय छे. आहिरना वासमां आजे आनंदनी सीमा न हती. ए पुत्रनी अद्भूत क्रांति, चकोर नयनो अने प्रातन तेनी साथेज जन्म्यां होय एवी तेनी बाल्यचेष्टा हती. पुत्रना आवा उत्तम लक्षणो अने सौन्दर्यता निहाळी मातापितानो प्रेम ए पुत्र उपर अवधि हतो. मातापिता

ए पुत्रने घडीभर विखुटो मुकतां नहि परंतु तेना लाडभावमां हर्षघेलां बनतां.

बाल्य अवस्था अपूर्व लाडभावमां खीलवा मांडी. जंगलो अने वृक्षोनी गीच घटाओमां गौओने चरावतां वृक्षना थडे पारणामां माताजी पुत्रने झूलावतां.

वालुडो रे हो मारो लाडकडो
मारो लाडकडो मारो लाडकडो
वालुडो रे हो मारो लाडकडो
हेते हुलावती स्नेहे फुलावती
चरणो हुं चुंबती रे हो मारो लाडकडो
व्हाल करुं व्हालाने हैयुं भराय छे
आश दीप झबके रे हो मारो लाडकडो
झाडे झूलावती हर्षाश्रु सारती
बाळ मने व्हालेरो हो मारो लाडकडो
हैयानां हीर मारा लाडकडा बाळने
लाडभर्यो लाडभर्यो हो मारो लाडकडो

हृदयमां हर्षघेलां बनेलां माता वृक्षना थडे पारणु बांधी बाळकने झूलावी रह्यां छे. आसपासना खेतरोमां गौमाता आदि चरी रह्यां छे. कोयलो मधुरा नादे गुंजार करी रही छे. जंगलनां मनोहर द्रश्यो नयनो समक्ष अवनवी ज्योति झगावी रह्यां छे. आवी अलौकिक कुदरतनी छायामां ए झूलाय छे,

हुलाय छे, फुलाय छे, अने दुनियाना मुसाफरो ए बाळकनी मुखाकृति अने बालचेष्टा निहाळी हरखाय छे.

ज्यारे सूर्यनारायण प्रकाश फेंके छे त्यारे तेनी ज्योति अजायब भासे छे. चंपाना वृक्षने पुष्प आवे छे त्यारे तेनी वास अपूर्व भासे छे. तेवीज रीते आ बाळकनो जीवन दीपक झळकवा मांडयो.

मातापिताना मोंघेरा लाडभावमां जीवनपुष्प खीलतां शुभ दिने ए बाळकनुं नाम सगतोजी पाडवामां आव्युं. परंतु मानव समुह ए बाळकने संतोकीयाना नामथी संबोधता. सगतोजीनी अपूर्व मुखाकृति जीवननी अजायब चकोरता, हास्य वदन अने दिव्य नेत्रांजनो मानवसमुहने हर्षमुग्ध बनावतां.

मातापितानी साथे जंगल अने वृक्षोनी आबोहवामां जीवनपुष्प खीलतां पांच वर्षनी वय थतां एक युवान वये पहोंचेला मानव जेटली बुद्धिमता खीलवा लागी. पुत्रनां लक्षण पारणामांथीज वर्ताय अने हीरो तेना तेजथी कदापि चलायमान थाय नहि. तेवीज रीते सगतोजीनु जीवन झळकवा मांडयुं.

भावोना भणकारा

आठ वर्षनी वये पवित्र वनवृक्षोनी छायामां घुरतां घुरतां पहाडो अने गीरीगुफाओनी सामे सगतोजी पोतानां चकोर

नयनो तलसावी रह्या हता. बुद्धिमत्ता कोई अनेरो संचार करी रही हती. आध्यात्मिक बळ जीवनने दिव्य सन्देश अर्पी रह्युं हतुं.

सगतोजी भावीना एक देवांशी संत बनशे तेनी कल्पना ते समये केम घडी शकाय?

सगतोजीना मनोमंदिरमां मायाना बंधनमांथी मुक्त थवा तेमज भावीने माटे तेमां नहि फसावा अद्वैत भान थयुं.

हुं कोण? अने क्यांथी? जगत साथे मारे शुं? संसार असार छे, माया अपार छे. एनाथी विरक्त बनवुं एज मारो निर्धार छे. एटला उद्‌गारो बाद जीवनना निश्चयो अपूर्व वेगे झझूमवा लाग्या.

संसार त्हारा यज्ञमां कंई वीरनर होमई चूकया
संसार त्हारा यज्ञमां बाहोश नर पटकई चूकया
संसार त्हारा यज्ञमां डाह्या दिवाना थइ चूकया
संसार त्हारा यज्ञमां बुद्धिधनो पण ना बच्या

येन केन प्रकारे आ फानी दुनिया अने मायाना विषयी नहि अभडातां आध्यात्मिक पंथे जीवनना संस्कारवाली दृढ प्रतिज्ञाए सगतोजी निडर बन्या.

सगतोजीए मातापिताने पोताना निश्चयथी वाकेफ कर्या सगतोजीना आ उद्‌गारो श्रवण करी मातापिता बेबाकळां

बनी गयां. पुत्र तरफनी मोहांधताए जीवनने घडीभर स्तब्ध बनाव्युं अने नयनोए अश्रुनी रेली करी.

जेना माटे भावी प्रबळ शक्ति अजमावी रहुं होय त्यां मानवनु शुं चाले ?

अहो ! कीरतार मायाना बंधननी पाछळ दुनियाना हरेक मानव मोहांध बन्या छे, के ए मोहनी धारा मानवने अश्रुपात करावे तेमां शुं नवाई ?

चक्रवर्ति होय के वासुदेव होय, राजा होय के राणो होय, श्रीमंत होय के निर्धन होय परंतु माताना प्रेम तो पुत्र उपर एकज सरखो होय.

सगतोजीनां मातापिता अति अश्रुनी धारा रेली रह्यां छे. पुत्रनी भावीनी विचार श्रेणी श्रवण करी मोहनीगां बेबाकळां बनी रडता हृदये प्रभुने प्रार्थना करे छे. ओ प्रभु आ पुत्रनी वियोगता केम सहन थशे ! ओ प्रभु आ गभरु बाळनी लाड भावना केम विसराशे ! ओ प्रभु आ लाडका पुत्रनी लालसा केम भूलाशे ! आ पुत्रना अंतरने आप जरापण कुमळु नहि बनावो ?

प्रेमे रडे हैयां अमारां नाथ अंतर ध्यावजो
मोहन जीवनने मारतो शांतिसुधा रेलावजो
जे आशमां झूलतां हतां ए स्वप्न आज विखाय छे
ओ पुत्र त्हारा कथनथी आंसु नयन उभराय छे

माया हृदयने वींधती तो पण जीवन झकडाय छे
ओ पुत्र त्हारा स्नेहथी अंतर विखूटां थाय छे

भाव भीना हृदये मातापिता अंतरमां कल्पांत करी रह्यां छे. कहेवत छे के बाळहठ योगहठ, राजहठ अने स्त्रीहठ ए चार हठो दुनियामां मशहुर मनाय छे, के एने फेरववी ए असंभवित निवडे छे.

ओ माता ! हवे तुं मने घडीभर ककळाव नहि.

संसार चित्र.

भवसमुद्रमां जीवन नावने हंकारतां अनेक मुसाफरो मायाना दुष्ट अने तोफानी पवने संसारना भेदी चक्रमां मोहना वावाझोडे फसाया छे.

पुत्रमां, पत्निमां, मित्रमां, स्नेहीमां, कुटुंबमां, वैभवमां, कीर्तिमां अने आप्तजनोना परितापमां झझूमतां भाग्येज कोइ वीरपुरुष आ भवसमुद्रमां जोलां खाता जीवन नावने वाहोश नाविकनी प्रबळता अने आत्मानी अगाध शक्तिने खीलवतां भवसमुद्रथी पार पाम्या छे. बाकी तो अनेक मरे छे अने अनेक जन्मे छे. भवसमुद्रनी ए पारावार घटना अने पथक पथक खीणो छे.

संसारनी भयरुप भेखडो अने मोहरुपी विकराळ जंगलोमां मायाना महान विकट पंथे कर्मरुप बळीए अनेकनां बळीदान लीधां छे अने अनेक मोतना पंथे सिधाव्या छे.

संसारना परिताप, कर्मरुप अग्नि, मायानी गुंथेली विषम सांकळो, मोहना मनोरम्य मिनारा अने वैभवनी अटेरीए रमण करतां केटलाए मानवो संसारमां भूलां भमी रह्यां छे. अनेक जीवात्माओ ए माया अने मोहना भयानक पंथे आत्मार्थी भोमिया वगर चोराशी लाख जीवयोनिमां भटकया छे, रखडया छे अने अधोगतीना गेबी खाडामां पटकाया छे.

संसारनी पारावार लीलामां रमण करतां विषयाशक्त मानवपक्षीओ मायाना भिन्न भिन्न तानमां हर्षघेलां बनी नाचे छे. कुटुंब निहाळी खुशी थाय छे, वैभव निहाळी फुलाय छे अने मायाना तानमां हरखाय छे.

आ असार संसारना कारागृहथी छुटवुं ए विरलाओनी ज विभूति छे.

अगम पंथ भक्तितणो
वीर नरोनां काम
कायर निरखी भागता
मोंघो ए विश्राम

मुक्ति तणा संग्राममां
कोण झूकावे शीर
मरण थकी जे ना डरे
एज कहाता वीर

जेणे संसारमां जन्म धारण करवा छतां आत्मानी अजब मस्तीने पिछाणी छे, पुत्र वनिता अने यौवनमां फसावा छतां जेणे भक्तिनी अजोड प्राधान्यता खीलावी छे, वैभवमां विश्राम लेवा छतां दानेश्वरी बनी परमार्थना पंथे, अने अवरनी उन्नति खातर भक्ति अने धर्मना पंथे अनेक शुभमार्गे लक्ष्मीनो सत प्रयोग कर्यो छे एवा वीर पुरुषनी कीर्ति मृत्युना पंथे जवा छतां जगतनी द्रष्टिए अमर गवाय छे. एवा केटलाए इतिहासो आजे जगतमां अस्तित्व धरावे छे.

मोक्षना महेमानो

जेणे आ फानी दुनियानो त्याग करी मायानी गुंथेली सांकळो अने संसारनी गेबी शेत्रंजोने तोडी फोडी अने आ संसारनी असारताने जीवनना प्रत्येक रोममां उतारी जेओए आत्मामां साची फकिरता प्राप्त करी छे एवा देवांशी संतो के जेओने आत्मार्थी फकिरो कही शकाय तेवा आत्मार्थी वीर पुरुषोनां नाम आ स्रष्टिने विषे अविचळ मनाय छे अने आलममां वसता लोकशासनमां पूजाय छे, भजाय छे अने स्मराय छे. एवा साचा आत्मार्थी जीवात्माओनु जीवन एज साची साधुता साधुनो अर्थ एटलोज थइ शके के जेणे आत्माने साध्यो होय तेज साधुत्वना पंथे आलेखाय. एवा शांत अने आत्मज्ञानी संत फकिर आ विषम समयमां जवल्लेज निरख-

वामां आवे, ए पण निर्वीवाद अने युगना पंथे सत्य अने माननीय मनाशे.

माता ! हवे हुं जाऊं छुं.

संसारना परितापनी असारताभरी विषम भट्ठीमां नहि होमातां आध्यात्मिक शांतिनी शोधमां मुक्तिना अमर पंथे जीवन नैयां झूलावीश.

ओ दुनिया ! तारा आंगणे ज्ञानेश्वरी पण जन्म्या छे.

ओ ! दुनिया त्हारा आंगणे देवांशी संतो पण जन्म्या छे.

ओ दुनिया ! तारा आंगणे विश्वना तारक एवा आध्यात्मिक योगेश्वरो पण जन्म्या छे.

आजनो रायकाश्री भीमतोलाजीनो मणाढर नगरमां रम्य करतो पुत्र सगतोजी भविष्यकाळना एक देवांशी संत के तारणहार महान योगेश्वर बनशे एनी रुपरेखा केम आलेखाय ?

करतार ! त्हारी माया अगम्य छे. अनादि काळना पुन्यना भरपुर खजाने करोडोनी संख्यामां वसतो लोक मुसाफरज त्हारा अविचळ मार्गनो भोमीयो बने छे.

सगतोजी वनवृक्षोनी गीच घटाओ, पर्वतना शिखरो, अने [illegible] रमण करतां भावीनी प्रतिज्ञा फळीभूत करवा मनोमंदिरमां ऊंडा ध्याने प्रभुनु चिन्तन करी रह्या छे, अने [illegible] गांडा बनी रही छे. दुनियाथी भान [illegible] विचारश्रेणीमां गुंथाया छे.

પૂર્વના પ્રબળ સંયોગે મહાત્માશ્રી તિર્થવિજયજીનો સંસર્ગ થયો. સગતોજીની આવી ઉંચ્ચ ભાવનાઓ નિહાળી તેઓશ્રી પણ ઘડીભરને માટે વિચારમાં પડ્યા અને જેના માટે કલ્પના-માત્ર ના થઇ શકે એવા એક ગભરુ બાળકની આધ્યાત્મિક વિચારશ્રેણી શ્રવણ કરી ચકિત બન્યા.

સગતોજીએ પોતાની નિશ્ચયવંત ભાવનાઓ દર્શાવી યેન કેન પ્રકારે ત્યાગના પંથે પ્રવેશી આધ્યાત્મિક શાંતિમાં જીવ-નનો વિકાસ ઉજ્વળ બનાવવાની ઉર્મિઓ પ્રદર્શીત કરી અને સગતોજીએ તેઓશ્રીના સંસર્ગમાં પ્રયાણ કર્યું. સોળ વર્ષની વય થતાં સુધી સત્સંગમાં જીવન વિતાવી સાધુ બનવાની ઉંચ્ચ કક્ષાએ પ્રેરાયા.

સાધુજીવનની તૈયારી

જોધપુર ઇલાકામાં આવેલ ગામ રામસીણમાં મહાત્માશ્રી તિર્થવિજયજી બિરાજતા હતા. રામસીણ ગામના પંચો સમક્ષ સગતોજીના દીક્ષા ઉત્સવ સંબંધમાં કેટલોક વાર્તાલાપ થવા બાદ સંવત ૧૯૬૧ ના માઘ સુદ પાંચમ (વસંત પંચમી) ના રોજ સગતોજીને દીક્ષા આપવાનું મુહુર્ત નિયત કર-વામાં આવ્યું.

રામસીણ ગામ અને તેની આસપાસ બીજાં ચોવીસ ગામ આવેલાં છે. તેમાં રામસીણ મશહુર ગણાય છે. રામસીણ

गामनी ते समयनी प्रतिभा उज्वळ आलेखाती. पांचशे जैन श्वेतांबर वीसा ओसवालना ग्रहो, जीनालय अने उपाश्रय विगेरे गामनी मनोरम्यता अने कीर्ति उदभवतां हतां.

उगतोजीना दीक्षा महोत्सवनो दिव्य संदेश श्रवण करी रामसीण गामनो मानवसमुह हर्षनी उर्मिओ उदभवतो आनंदमय ओजसना उच्च शिखरे रम्य करतां भावभीना विचारो संकेलतो हतो. विविध प्रकारनी उर्मिओए मानव समुहने हर्षघेलां बनाव्यां हतां. अपूर्व अजायबता साथे मानसीक तमन्नाओ उच्च कक्षाए झझूमी हती. जीवनमां कदापि श्रवण नहि करेली अने भावीमां संभवित न मानी शकाय एवी आजनी दैवीक घटना हरेकना मनोमंदिरमां दिव्यता पुरती हती.

सद्भाग्य मानवां के पुन्यनो महान उदय मानवो? हर्षोजली मानवी के दैविक दुंदुंभी मानवी? रामसीणमां वसता मानवसमुहना भीतरना आ अपूर्व भावभर्या उदगारो हता.

अठाइ महोत्सव, वरघोडा, स्वामीवात्सल्य आदि साथे [illegible] उत्साहे दीक्षा महोत्सव उजववानी भावभीनी तैयारीओ [illegible] थइ.

[illegible] रामसीण गामना ठाकोरश्री जोरावरसिंहजी [illegible]. रामसीण गामना ठाकोरोमां तेओनी कीर्ति श्रेष्ठ

मनाती हती. स्वभावमां सरळ अने मीलनसार होइ तेओनी प्रतिभा उज्वळ आलेखाती ठाकोरश्री जोरावसिंहजीने पोता माटे बेसवानो एक मुख्य घोडो हतो. ते घोडा उपर स्वार बनी वायणे फरवानी सगतोजीनी खास तमन्ना होवाथी गामना पंचोए ठाकोर साहेब समक्ष प्रस्तुत घटना दर्शावी. ठाकोर साहेब पण एक आहिरना पुत्रनी साधु अवस्था ग्रहण करवानी जीज्ञासा, अने दीक्षा महोत्सवनी भावभीनी तैयारीओ श्रवण करी आनंदमुग्ध बन्या अने पंचो समक्ष पोतानो घोडो आपवा-नी भावना व्यक्त करी.

दीक्षाना एकवीश दिन अगाउथी सगतोजीने वायणे नोतरवानो क्रम गोठवायो. वायणु एटले जे ग्रहस्थने त्यां जमवानु आमंत्रण करवामां आव्युं होय तेओने त्यां उत्तम वस्त्रालंकारोथी विभुषीत थइ वाजते गाजते जमवा जवानु. छेवटनी संसारिक भावनाओ पुर्ण करवानी आ अभिलाषाओ कहीये तो चाली शके.

दीक्षा महोत्सव

रामसीण गामनी अंदर आ भव्य तैयारीओ शानी थइ रही छे ?

बहारथी आवतो हरेक मुसाफर आ भव्यता सामे नयनो फेंकी रह्यो हतो. एटलुं श्रवण करवामां आवतुं के आहिर-

ज्ञातीमां जन्मेल एक गभरु युवान त्यागना पंथे सा धुथवाने दीक्षा अंगिकार करवाना छे, तेनी आ अपूर्व तैयारीओ चाली रही छे. दीक्षा महोत्सवनी दिव्यता निरखवा रामसीण गामनी पादरे आसपासनां गामोमांथी असंख्य मानवमेदनी उलटी हती.

आहिर ज्ञातीनो एक गभरु युवान केटलो बधो पुन्यशाळी हशे के आजे ए त्यागना पंथे जीवननैयां झूकावशे! आवा भावभीना उद्‌गारो चिंतवतां असंख्य मानवसमुह रामसीण गाममां प्रवेशवा मांड्यो.

दीक्षा समय १९६१ना माघ सुद पांचम
(वसंतपंचमी)

अट्टाई महोत्सव, स्वामी वात्सल्य आदि शुभकार्यनी समाप्ती बाद आजरोज दीक्षानो वरघोडो हतो. आजना प्रभातथी ढोल वार्जीत्र शरणाई नोबत बगीओ घोडा पालखी आदिना समारंभनी अपूर्व तयारीओ थई. सूर्यनारायण पण पोतानो भव्य प्रताप फेलावा लाग्यो. रामसीण नगरमां वसतो मानवसमुह, स्त्री पुरुष बालक आदि सर्व आ दिव्य वरघोडानो अद्भुत आनंद लूंटवा पोतपोताना उच्च प्रकारना शुभ वस्त्रालंकारोथी सज्ज थयां. अने टुंक समयमां वार्जींत्र ढोल शरणाई आदिना गगनभेदी नादोए रामसीण नगरने जाग्रत करी दीधुं.

सगतोजी पण संसारिक अवस्थाने छेवटनी अंजली अर्पी आत्ममार्गे प्रवेशवाना होवाथी तेमने उंच्च कोटीना शुभ वस्त्रालंकारोथी विभुषीत करवामां आव्या अने कुमारिकाना शुभ हस्ते ललाटमां कुमकुमनु मंगळ तिलक करावी हथेलीमां श्रीफळ अने चांदी नाणु अर्पी सज्ज करेल पालखीमां बिराजमान करवामां आव्या. पालखीमां द्रव्य तथा बदामोनो ढग करवामां आव्यो. तुरतज जयजयना गगनभेदी नादो साथे दिव्य वरघोडानी शरुआत थई. सगतोजी मानवसमुहना सामे चकोर नयनो तलसावतां द्रव्यादिनी वृष्टि करता हता. आ समये रामसीण नगरमां असंख्य मानवमेदनी उलटी पडी हती. नगरनी चोतरफ प्रदक्षिणा फरी वरघोडो उपाश्रय नजीक आवी गयो. सगतोजी पालखीमांथी उतरी जीनालयमां दर्शन करी उपाश्रयमां प्रवेश्या. गुरुश्री तिर्थविजयजीने वंदना करी गुरुना आदेश मुजब दीक्षानी विधीमां जोडाया.

शिवीका परथी भूमि पर उतरे
मदमाया मोह मने विसरे
शुभ वस्त्र सज्यां निज देह परे
अलंकार तजी सहु दूर करे. १

हूं कोण अने क्यांथी उपन्यो
ए भान पलेपल याद करे

मुज ज्ञात नथी मुज तात नथी
मुज मात नथी हुं एक खरे. २

गुरु चर्ण पडी विधी सर्व करी
शीर लोच चूंटी शुभ वेश धरे
सहु माफ करो सहु माफ करो
नहि वेर अने नहि खेद अरे. ३

सब जीव क्षमा आपो मुजने
हुं सर्व जीवोने खमावुं अरे
शुभ वेश सजी प्रभु वीर तणो
हु वीरपणुं राखीश खरे. ४

कदी कष्ट पडे मुज शीर परे
पण शांति कदी न तजीश अरे
निर्जर वनवस्ती प्रदेश महीं
मुज आत्मतणु साधीश खरे. ५

हुं संत बनु हुं संत बनु
संयम व्रत भार वहीश हवे
दृढ निश्चय आत्म करुं मनथी
दुःखथी नहि पीछे करीश हवे ६

अंगे वस्त्र सजेल सर्व मुकयां आभुषणो अंगथी
मायाने ममता बधी मन तजी साधुत्वना रंगथी
मानवपुर उभर्यां अती निरखतां अश्रु नयनथी वहे
क्यां ए आहिरपुत्र आज साधु संन्यास पदने वरे
संयम भार उठाववो कठीन छे खांडा तणी धार छे
कायर नरनु काम नहि अरेरे खिरला तणी पार छे
आशिष आपे वृद्धजन मुखेथी कल्याणकारी थजो
वीरवळनी हाकल करी जगतना कल्याणकारी हजो

निहाळो ! निहाळो ! निहाळो !

ए आत्मदिक्षा उचरे छे अने विश्वना साधु बने छे.

पंचमुष्टि लोच, स्नान आदि क्रिया पूर्ण थतां सगतोजीने साधुवेश अंगीकार करावी गुरुश्री तिर्थविजयजीए पोताना शिष्य तरीकेनी मस्तक उपर वासक्षेप नाखी तेओश्रीनु नाम मुनि महाराज श्री शांतिविजयजी स्थापित कर्युं. एकत्र थयेल मानवमेदनीए घडीभर प्रेमनां अश्रुओ वषाव्यां अने वृद्धोए आशिष अर्पी.

" हे पुत्र! तमो कल्याणकारी थाओ "
" हे पुत्र! तमो साचा वीर थाओ "

आत्म भावना

(हरिगीत छंद)

हुं जाउं छुं हुं जाउं छुं
त्यां कोइ पण नहि आवशो
मस्तो तणा ए महेल छे
कायर नहि त्यां फावशो १

ए धून छे विरलातणी
निश्चय विना नहि आवशो
मुक्ति तणो ए पंथ छे
भक्ति सुधा रेलावशो २

संसार नाम असार छे
माया जीवनथी मारशो
मृत्यु भीति नहि होय तो
घटमां प्रकाश झगावशो ३

हुं कोण ने क्यांथी थयो
ए शोधमां हुं निसरु
हुं ज्ञान नहि मुज ज्ञान नहि
हुं आत्म पंथे विचरु ४

स्नेही नहि मित्रो नहि
हुं एकलो हुं एकलो
नहि कोइ मारुं जगतमां
हुं एकलो हुं एकलो ५

हुं संत विश्व तणो बनु
मुज आत्मनो साधक थवा
वनवास ने पहाडो महि
विचरीश मनने साधवा ६

कर्मो सतावे कारमां
ए ख्याल मनमां नहि करु
सोहम् तणा स्वप्ना महि
भव भय तणां दुःखडां हरु ७

निश्चय कदापि नहि चूकुं
हुं आत्ममस्तीमां झूकुं
मुक्ति विरुद्ने पामवा
मारी प्रतिज्ञा नहि चूकुं ८

चैतन्यघन ! चैतन्यघन !
आनंदघन ! आनंदघन !
करशुं नमन ! करशुं नमन !
करशुं नमन ! करशुं नमन ! ९

आत्मभावनानां अविचळ सुत्रोनां संस्मरणो करतां आध्यात्मिक शांतिना उपासक वनवानी तमन्नामां प्रेराया. साधु अवस्थानो पुरो बोधपाठ ग्राह्य करवामां आवे तो तेनो अर्थ एटलोज थइ शके के साधुना वेषथी मानवनो आत्मा साधु बनतो नथी. परंतु साधुतत्वना ग्राहक बनी साधुत्वना पंथे जीवननाव हंकारे छे तेवा विरल आत्माओनीज साधुता पूजनीय मानी शकाय. बाकी वर्तमान समयना वितंडावादमां नयनो फेरवीए तो श्रद्धाहिन्य बनवाना बोधपाठ सिवाय साधुत्व भाग्येज निरखवामां आवे.

दिक्षा अंगीकार कर्या बाद आपणा देवांशी संत साधुत्वना अमर पंथे विचरवानी द्रढ प्रतिज्ञाए रामसीणथी श्री मांडोली नगरमां पधार्या. श्री मांडोलीनगर ए दादागुरु श्रीमद् धर्म-विजयजीना जन्म अने काळधर्म पाम्यानु स्थान हतुं. दादागुरुनी अंकित प्रतिमानु टुंक अवलोकन हुं आगळ करी गयो छुं. के जेमनी आपणा देवांशी संते नीचे मुजब प्रार्थना करी छे.

न श्रद्धयैव त्वयि पक्षपातो नद्वेष मात्राद् रुचि परेषुः
यथावदाप्तत्व परीक्षयातु त्वामेव वीर प्रभुमाश्रितास्मः

श्री **हरिभद्रसूरिजी** महाराज कहते हैं कि जो साधन साध्य से जोडता है वह धार्मिक योग कहाता है. और जो धर्मानुष्टान शुद्ध आत्मासे संयोग करावे वह योग है. " **योगी योग निरोधः** " अर्थात् सावधको रोकने से स्वाभाविक ही मन, वचन और कर्म पुण्यकी ओर बढते है. मन, वचन, और कर्मका पुण्य की ओर जाने से योग निरुद्ध हो कर शुद्ध आत्माको परमात्मा का दर्शन मिलता है.

पातंजलीने कहा है कि " **योगश्चित प्रवृत्ति निरोधः** " अर्थात् चित्तकी वृतियोंको रोकना ही योग है. जब चित्तकी वृतियोंका निरोध हो जाता है तो "**द्रष्टु स्वरुपेऽवस्थानम्** " अर्थात् आत्माको अपना रुप भासने लगता है.

कहा है—

पूजा कोटि समं स्तोत्रं स्तोत्रं कोटि समं जपः ।
जपात् कोटि समं ध्यानं ध्यानात् कोटि समं लयः ॥

करोडो पूजा के समान एक स्तोत्र, और करोडो स्तोत्र समान जप, और करोडो जप के समान ध्यान, और करोडो ध्यान के समान लय (समाधि) होती है.

पुनः

निर्विकल्प समुत्पन्नं ज्ञानामृत पयोधरं ।
विवेक मंजलिं कृत्वा तं पिबन्ति तपस्विनः ॥

निर्विकल्प से पैदा हुए ज्ञान रुपी अमृत के समुद्र को विवेक की अंजली बना कर तपस्वी लोग पीते है.

समतामृत मग्नानाम् समाधि धूत पाप्पनाम् ।
रत्न त्रय मयं शुद्धं परज्योति प्रकाशकः ॥

समता रुपी अमृत में मग्न हुए तथा समाधि से धो डाला है अन्तःकरण के पापोको जीन्होने और ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र से शुद्ध हुए महापुरुष ही परम ज्योति को प्रकाश कर सकते है.

यत्क्षणं दृश्यते शुद्धं तत्क्षणं गत विभ्रमः ।
युस्य चिन्तं स्थिरीभूतं निर्विकल्पं समाधये ॥

आत्म तत्व विषे जब योगिराजका चित्त स्थिर हो जाता है तब निर्विकल्प समाधिको प्राप्त कर स्वस्थ चित्त हो शुद्ध आत्माको पाता है.

श्री मांडोली नगरथी टुंक समय बाद आपणा देवांशी संत रामसीणमां पधार्या. दिक्षा महोत्सवना शुभ प्रसंगमां द्रव्यनो व्यय करवामां शेठ नोपाजी डाह्याजीनो अपूर्व फाळो हतो. जेओनु रामसीणमां एक मकान हतुं तेमां कोइ मानव वास करी शकतुं नहतुं. ते मकानमां आपणा देवांशी संते त्रण दिवस वास कर्यो, अने त्यारबाद ते मकानमां तेओ सर्व विना भीतीए वास करी शक्या.

आध्यात्मिक पंथे प्रवेशी आपणा देवांशी संते गतकाळनां सौन्दर्य अने पूर्वगामी महान पुरुषोना सिद्धान्तोने अनुसरी आत्माने उच्च कक्षाए देदिप्यमान बनाववानी अपूर्व तालावेली- मां [illegible] निर्धार कर्यो.

हृदयमंदिरमां [illegible] स्थापन करी अने गीरीगुफाओमां

विचरवानी महत्वाकांक्षाए योगमार्गना अधिकारी बनवा मौन अने ध्याननी गतिमां प्रवेश्या.

ॐकार बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमोनमः

ॐकार आ विश्वनो अमोलो मंत्र छे.
ॐकार आ विश्वनो कल्याणकारी मंत्र छे.
ॐकार सर्व मंगळोमां प्रथम मंगळ छे.
ॐकार ए सर्व मंत्रोनो राजा छे.
ॐकार मां ब्रह्मा विष्णु महेश्वर आदी सर्व देवो छे.
ॐकार मां पंच परमेष्टि देवो छे.
ॐकार सर्व सिद्धिनो दायक छे.
ॐकार कर्म समुहने भस्म करनार छे.
ॐकार शान्तिनो साचो मिनारो छे.
ॐकार आत्मानो साचो मार्गदर्शक छे.

आत्म समाधिना अविचळ पंथे प्रवेशतां आपणा देवांशी संते गानमां तानमां अने ध्यानमां ॐकार मंत्रने स्थापन कर्यो. योगमार्गना अभ्यासी बनवानी अपार लगनीमां उच्च कक्षाए आत्म मस्तीना अवर्णनिय दिव्य सूत्रोने अंगीकार करवा पर्वतना शिखरो, कोतरो अने गीरीगुफाओमां विचर्या.

सज्जन रोड स्टेशनथी एक माइल दूर अजारी गाम आवेलुं छे. ज्यां कुमारपाळ राजानु बंधावेल बावन जीना-

लयनु मंदिर छे. अजारी गामथी अडधा माइल उपर मार्कंड ऋषिनु आश्रम अने सेंकडो वर्ष पूर्वेनु सरस्वति देवीनु मंदिर आवेलुं छे.

मार्कंड ऋषि छेल्ला त्रण सैकानी आसपास देवलोक थयानु मानवामां आवे छे. वैष्णवसंप्रदाय जेवी रीते गोपीचंद अने भर्तृहरीने अमर माने छे तेवीज रीते मार्कंड ऋषिने पण मानवामां आवे छे. मार्कंड ऋषिना आश्रमनी लगोलग ए सरस्वति देवीनु रमणीय स्थान आवेलुं छे. एनी प्रतिमा अने दिव्यता अगम्य मनाय छे. हिंदुस्ताननां इतिहासमां आ मंदिर अत्यंत पुराणु अने पूर्व समयमां थयेल महान पुरुषोने दिशासुचक आज स्थान हतुं, एम कहीए तो चाली शके.

श्री अभयदेवसूरि महाराज, कळीकाळ सर्वज्ञ मनाता श्री हेमचन्द्राचार्य, श्री सिद्धसेन दिवाकर, श्री बपभट्टसूरि, वसिष्ठ ऋषि, विश्वामित्र ऋषि, राजा भोज, पंडित काळीदास आदि अनेक महान पुरुषोए आ परमपवित्र स्थानमां जीवन-लक्ष्याने आत्मसमाधिना अविचळ पंथे प्रेरी छे.

पर्वतोना शिखरो, कोतरो अने पांचसे खजुरीना वृक्षनी वीचोवीच छायानी मध्यमां आ परमपवित्र स्थान अपूर्व रमणीयता अने असीम शान्तिनो भास करावतुं दिव्य ज्योति झगमगावी रह्युं छे. एनी विशिष्टतानु विशेष अवलोकन करवानो आ स्थळे वधु समय नहि होवाथी तेनो टुंक इतिहास आलेख्यो छे.

महात्माओना माटे आ एक असीम शांतिनु स्थान छे. आ पवित्र स्थानमां आपणा देवांशी संते लांबोकाळ आत्मसमाधिमां रमण करी जीवननैयाने आध्यात्मिक पंथे आगळ धपावी छे.

मार्कंड ऋषिना आश्रममां लांबोकाळ आत्मसमाधिमां निर्गमन करी आध्यात्मिक पंथना प्रेरक बनी आपणा देवांशी संत पवित्र आबु गीरीराजमां पधार्या. पूर्वकाळमां थइ गयेला अने प्रभुतामां पूजाता असंख्य ऋषिमुनिओए आबु पर्वतनां विकराळ जंगलो अने गुफाओमां आत्मसमाधि द्वारा प्रभुता प्राप्त करी छे.

आबु पर्वतनी अद्भुत घटनाओ दर्शावता चीर स्मरणीय कीर्तीस्थंभो अने दैविक स्थानो आजे पण यशस्वी छे. आबु पर्वतनी अद्भुत प्रतिभाथी भाग्येज कोइ अजाण हशे. आबु पर्वतनां विक्राळ जंगलोमां झगमगतां दैविक स्थानो जेवां के वशिष्ठाश्रम, पाटनारायण, गुरुशिखर ऋषिकेष आदि एवी भयभीत भूमिमां आवेलां छे के ज्यां हिंसक प्राणी सिवाय मानव भाग्येज विचरी शके. आवां स्थानोमां आपणा देवांशी संते आत्मसमाधिमां रमण करतां मृत्युने हथेलीमां राखी मौन अने तपश्चर्यामांज जीवननैयांने झूलावी छे.

महान घोर अभिग्रहो अने मरणान्त उपसर्गोनो सामनो करी कर्म समुहने खाख करवा केवळ क्षमासूत्रोनी माळा भजतां वर्षोनां वर्षो अध्यात्मिक पंथे वितार्व्यां छे. रसेन्द्रियनो निग्रह

करवा मीठा वगरना अडदना वाकळा पर रही अडोल आसने छ छ मास सुधी ध्यानस्थ दशामां जीवननैयां झूलावी छे. ए समयनी दैविक घटनाओ उद्‌भवतां आपणा देवांशी संते पोताना पूर्वभूत सिद्धांतोने यशस्वी बनाववा महान पुरुषोना जीवनना बोधपाठने हृदयमंदिरमां कोतरी भगवानश्री महावीर-नो एकज सिद्धान्त "क्षमा विरस्य भूषणम्"ने अमर बनाव्यो छे.

एक समय आपणा देवांशी संत श्री वामणवाडजी तिर्थमां विराजता हता. धर्मशाळामां दाखल थतां मुख्य द्वारना मेडा उपर तेओश्रीनो निवास हतो. ते मेडो अने जमीनदळनी वचमां पंदर फुटनी उंचाई हशे. जमीन उपर मात्र पत्थरोनी शीलाओज हती. ए मेडानी बारी पासे आ देवांशी संत रात्रीना ध्यानस्थ दशामां विराजता हता. ते समये अचानक उपसर्ग थवाथी नीचेनी जमीन दळना पत्थरोमां पटकाया, अने मस्तक-मांथी लोहीनी धारा वही. टुंक समय बाद कारखानाना माणसोने खबर पडतां त्यां आवी पहोंच्या, अने तेओश्रीने मेडामां विराजमान कर्या.

पूर्व समयना महान पुरुषोना सिद्धांतोने रोमेरोममां कोतरी आपणा देवांशी संते वर्षो सुधी पर्वतना शिखरो, कोतरो, गीरीगुफाओ अने भयानक निर्जन वनोमां विचरी ध्यानस्थ दशामां रम्य करतां आध्यात्मिक पंथे आत्मज्योत प्रकाशी छे

पी. ए. महेताना मननीय उद्गारो.

अरे! मने ज्यारे हिन्दना छप्पन लाख साधुओ, बावाओ अने फकीरो याद आव्या त्यारे मने विचार थयो के, मांहो-मांहे चीसकारी पाडता, घुरका घुरकी करता अने हरामनी रोटी खानाराओ ए क्यां अने आ महान पुरुष क्यां?

आत्मानी साक्षीए कहुं छुं के में मारी जींदगीमां खरेखरो आनंद मेळव्यो होय तो आ महान पुरुष शांतिविजयजीनां चरणोना ज्यारे में दर्शन कर्यां त्यारेज. भूतकाळमां जे महान पुरुषो थइ गया छे ते कोटीमां तेओ अत्यारे सहेजमां आवी उभा छे. एमनो जे भोळो देखाव उपरनो देखाय छे के "आतो कोई बाळक जेवा बावा भोळा देखाय छे" पण ए महान पुरुषनां अंदरनां तत्वो घणाज उत्तम छे अने जेनी गति पण गहन छे एवा पुरुषने ओळखवा माटे, महान शक्तिवाळो जीव होय तोपण घणा लांबा टाईमे कांईक अंशेज समजी शके छे.

कोण कहे छे के भारतमां अमृतगंगा नथी? कोण कहे छे के–दुनियामां कल्पवृक्ष नथी? में तो एम मान्युं हतुं के ए तो कोई मंत्र वादी देवी उपासक हशे पण एतो कळीकाळमां अलौकिक राजयोगनो खरेखरो अनुभव मेळवेला महान पुरुष छे. अरे! में तो आटला वरस सुधी भुलज खाधी,

कारण के मारी मति अने कल्पनाए मने खरेखरो दगो दीधो. कारण के मने ओळखतां आटला वरस लागी गयां.

हुं ए महान पुरुषनी तारीफ नथी करतो. पण ए सत्यनो संदेशो जगतने अंधकारमांथी अजवाळामां आववा माटे कहुं छुं. ए महान पुरुषना गुणोतो घणाज छे पण केटलुं लखी शकाय ? मने तो लाग्युं छे के तेओश्री सर्वना मनना विचारो बहु सारी रीते जाणी शके छे. अरे ! कहेवुं न कहेवुं एतो एमनी मरजीनी वात छे. एमने माटे मारे शुं शब्दो संबोधवा ते कांइ हुं समजी शकतो नथी.



दिव्य ओजसो

गजल

प्रतिभा विश्वमां झळकी
दीपकनां तेज प्रगटायां
अविचळ भावनी झांखी
सरोवर स्नेह रेलायां

नती ज्यां कल्पना त्यां त्यां
अजब घटना बतावी छे
बन्युं जे ना बने त्यां त्यां
अमर बंसी बजावी छे

संसारना परितापनी विषम भट्ठीमां नहि होमातां साधुत्वना रंगने प्रत्येक रोममां पुरतां पुरतां आत्म समाधिना अविचळ शिखरे चडवानी कुच कदममां आगे धपतां आपणा देवांशी संत पहाडो, वन वृक्षो अने गीरी गुफाओमां रमण करता आबु गीरीराजनी आसपासनी भूमिमां विचरता हता.

,, माया देवीनी मोह जाळोने एणे वींखी नांखी हती
,, संसारनी शेत्रंजोने एणे तोडी नांखी हती.

,, मारा व्हाराानी मीमांसाओ एणे भस्मीभूत बनावी हती.
,, संसारिक विपत्तीओथी विराम पामी केवळ सोहम् सोहम्नीज भट्ठी धखावी हती.

,, दुनियाना दगलबाजो अने जगतना जादुगरो सामे नयनो नहि फकतां आगोचर पंथेज प्रयाण कर्युं हतुं.

,, हुं कोण ? अने क्यांथी ? आ एकज तमन्नामां जीवन नैयां झझूमी हती.

आवा समये आपणा देवांशी संत लोक शासनना व्यव-[illegible] [illegible] एकांत अने आत्म समाधिमांज जीवनना [illegible] [illegible] ध्यान [illegible] समर्पी निजानंद लुंटता हता.

[illegible] अनंत शक्तिओ छे. आत्मा अरुपी छे अने देह [illegible] छे. बहिरात्मा अंतरात्मा अने परमात्मा ए [illegible] करतां महान योगेश्वरो अने अवधूतोज [illegible] गतिमां प्रवेशी आत्म ज्योतिनो दीपक [illegible] छे. आवा आत्मार्थी पुरुषोनी भावना [illegible] होय छे छतां जेनु कल्याण थवानु [illegible] बोध पाटने प्राप्त करी भक्तिना [illegible] छे.

वर्तमान समयना विज्ञानकारोनी शोधोने निहाळतां एवी केटलीए शोधन कळाओ आजे आपणा नयनो समक्ष तरी आवे छे के आ सर्व घटनाओनो उंडा उतरी ख्याल करीएतो आखरे हरेकमां कुदरतनीज दैवीक शक्तिओ प्रवेशेली छे.

जेवी रीते रेडीया उपरज आपणे विचारीएतो घणीज सहेलाइथी समजी शकाय तेम छे. रेडीओ एकज स्थान परथी ब्रोडकास्ट थाय छे परंतु हजारो कोसना अंतरे वसतो मानवसमुह ते श्रवण करी शके छे. आ वस्तुस्थिती पण विचार गम्य छे कारणके तेमां पण एटलुं तो अवश्य छे के जेने त्यां रेडीयानु मशीन होय तेज ए श्रवण करी शके छे बाकी आखुं जगत श्रवण करी शकतुं नथी.

तेवी रीते महान योगेश्वरो अवधूतो अने देवांशी संतो विश्वभरमां सततपणे दिव्य संदेशनो ब्रोडकाष्ट कर्या करे छे छतां ए संदेशने झीलवा माटे शुद्ध हृदय रुपी रेडीयो धराव-नारा पुन्यवान जीवात्माओ जवल्लेज मळी आवे छे.

दुनियातो विविध प्रकारे मायाना परितापमां झझूमेली छे ते मायावी दुनिया कदापि आत्मज्योतिना प्रकाषने ग्रहण करी शकती नथी.

आपणा देवांशी संत आजे आत्मज्योतिनो दीपक विश्व-भरमां प्रगटावी रह्या छे.

साधु थवुं ना स्हेल छे   बंधन कदी ना तूटतां
मद्मोह ने माया खरेखर   आत्मधनने लूंटतां
व्याधि विरागे वीरला   भट्ठी जलावे ध्याननी
भस्मी करी कर्मो तणी   माळा भजे भगवाननी

गुरु शिष्यना मेळापने लांबो काळ निर्गमन थयो हतो आ समये आपणा देवांशी संतना गुरु श्री तिर्थविजयजी महाराज मांडोली गाममां बिराजता हता. एक दिवस मध्यान्हे शिष्यनु चिंतवन करतां गुरुश्री तिर्थविजयजीना नयनोमांथी आंसु टपकवा लाग्यां. शिष्यना जीवननी विचार सरणी हृदयमंदिरमां प्रवेशतां चिंतातुर बन्या हता तेज दिवसे आपणा देवांशी संतनो मांडोली गामे गुरुश्री तिर्थविजयजी उपर कागळ आव्यो के "हुं आप तरफ विचरुं छुं."

फेदाणी गाममां ते समये आशरे जैनोनां पांत्रीशेक घर हतां. गाममां जीनालय आदी कंइ ज हतुं नहि. आपणा देवांशी संते गाममां निवासस्थान नियत कर्या बाद गामना पंचोने बोधपाठ करतां प्रभुभक्ति माटे जीनेश्वरदेवनी मूर्ति स्थापन करवा सूचव्युं. आपणा देवांशी संतना संदेशनो सत्कार करी गामना पंचोए जीन प्रतिमाजी स्थापन करवानु नक्की कर्युं.

गामना पंचोनी आर्थीक स्थिती सामान्य होवा छतां ते शुभ दिने लावशीनु भोजन करवानु नियत कर्युं अने आपणा देवांशी संतना उपदेश अनुसार आसपासना गाममांथी जीन प्रतिमाजी लावी शुभ दिने प्रतिष्ठा करी.

जे शुभ दिने प्रतिमाजी विराजमान करवामां आव्यां तेज दिवसे आपणा देवांशी संतना दर्शनार्थे मांडोली अने आजुबाजुना गाममांथी लगभग अढीसो मानव सांजना चार वागता पछी गाममां आवी पहोंच्युं. आजना शुभ दिने मंगळ कार्य होवाथी गामना पंचोए पोतानी शक्ति अनुसार पचासेक मानव जमे तेटली सगवडे रसोइ तैयार करी हती.

विना संकल्पे अने अणधार समये अढीसो मानवना आववाथी गामना पंचो मानसीक विचारश्रेणीमां गुंथाया. सांजना चार वागता पछीनो समय होवाथी वधारे रसोई बनाववा जेटलो अवकाश न हतो अने बहारथी आवेलां मानवोनुं सन्मान करवुं ए पण प्रथम दरज्जे फरज हती.

मानसिक मुंझवणो वितावतां पंचोए आपणा देवांशी संत समक्ष सघळी हकिकत जणावी. ते समये आपणा देवांशी संते खात्री आपी के तमो सर्व विना भीतीए सर्वने भोजन करावो जेथी कोई वस्तुनी उणप नहि रहे एवो मारो आशिर्वाद छे.

आपणा देवांशी संतना आटला कथन बाद पंचो हर्षमुग्ध बन्या अने हर्षनी छोळो वहावतां बहारथीआवेला महेमानोने जमण सारु नोतर्या. बहारथी आवेला तमाम महेमानो अने गामना पंचो सर्व भोजन जम्या अने त्यारबाद गाममां हरेक घेर प्रसादी तरिके लापशी वहेंचवामां आवी.

फेदाणी गामना पंचो आ दैवी घटना निहाळी चकित बन्या के जेनी कल्पना सरखी न हती ते शुभ कार्य आनंदनी अवधि साथे पूर्ण थयुं.

मांडोली गाम अने आजुबाजुना गाममांथी आवेला महेमानो आ दैवीक घटना प्रत्यक्ष निहाळी हर्षनां स्वप्न वितावतां आपणा देवांशी संतनां दर्शन करी पोतपोताना गामे विदाय थया.

फेदाणीथी विहार करी आपणा देवांशी संत मांडोली गाममां पधारी गया अने गुरु श्री तिर्थविजयजीना मनोमंदिरमां शान्तिसुधा रेली.

विहार थया बाद लांबा समये आपणा देवांशी संत

पधारता होवाथी मांडोली गाम अने आजुबाजुना गामना मानवसमुहमां अपूर्व आनंद रेलायो हतो.

आत्मसमाधि अने निजानंद ए आपणा देवांशी संतनां जीवनसूत्रो हतां. अद्यापि सुधीनो जीवन रथ ते पथे हंकारतां आपणा देवांशी संत सोहमनी ध्यान शैय्यामां झूलतां झूलतां आत्म ज्योतिनो दिव्य प्रकाश झघावी रह्या हता.

मांडोली गामनी आसपास चोर अने धाडपाडुओनो भय झझूम्यो हतो. आजुबाजुना गाममां लूंटफाट चाली रही हती. आवा समये मांडोली गामनो मानव समुह पण गभराटमां मुकायो हतो. जीवनमां हाम खूटी पडी हती. भयनी भीतीमां अधीरो बन्यो हतो. रात्री अने दिवस आजुबाजुनु वातावरण श्रवण करतां मुंझवणमांज जीवननी घडीओ वितावतो हतो. धन, माल, वैभव, कुटुंब अने परिवारनी मोह दशामां धीरज केम रही शके ?

आवा समये आपणा देवांशी संते मांडोली गामना मानव-समुहने खात्री आपी हती के विना भीतीए तमो सर्व भक्ति अने आनंदमांज जीवन वितावो, मांडोलीने कंइ पण थवानु नथी. आजुबाजुना गामोमां लूंटफाट थइ परंतु आपणा देवांशी संतनी शुभाशिषथी मांडोली गाम आबाद रहुं.

विश्व प्रेमनां अमूलां वचनामृतो वरसावतां आपणा देवांशी संत मांडोली अने आजुबाजुना गामोमांथी आवता हरेक

मानवने भक्ति गंगामां स्नान करावी पावन बनावता [illegible] आवनार मुसाफरो तेओश्रीनां दर्शन करी लांबा समयनी [illegible] छीपावता.

आत्म समाधिना अविचळ शिखरे झुलतां आपणा देवांशी संत संवत १९७७ नी सालमां माह मासना अरसामां शिवगंज नगरमां बिराजता हता. ध्यानस्थ दशामां रमण करतां एक दिवसे गोचरी निमित्ते प्रयाण करतां [illegible]जी नामना एक विशा ओशवाळ ग्रहस्थना घरमां प्रवेश्या के ज्यां एक बाळक अपंग दशामां पडेलो हतो, गोचरी वहोर्या (भिक्षा लीधा) बाद ते बाळकनी दयामय स्थिति निहाळतां आपणा देवांशी संते प्रश्न कर्यो के "आ बाळकने शुं थयुं छे?" प्रत्युतर मळ्यो के "बावजी! ए घणा समयथी आवी अपंग दशामां ज छे." ते समये आपणा देवांशी संते शुभाशिष अर्पी के "शांति थइ जशे" आटला कथन बाद आपणा देवांशी संत आश्रयस्थान तरफ विदाय थया.

जे बाळक अपंग दशामां पडेलो हतो ते चालतो थयो अने गत जीवन नविन गतिमां प्रवेश्युं. ते बाळकनु नाम शुकनराज धनरुपमल छे जे हाल विद्यमान छे अने हालमां तेओनी उमर सत्तावीश वर्षनी हशे.

आत्ममस्तिनो दीपक प्रगटावता आपणा देवांशी संतनी शुभाशिषथी शिवगंजनगरमां घणाज लांबा समयनो कलह हतो

ते पण विराम पाम्यो अने स्नेहसुधा रेलायां. सोहमनी ध्यान-शैयामां जीवननैयांने झूलावतां आपणा देवांशी संत लोक-शासनना वाह्यभावथी विमुख रहेता अने जगत पण तेओश्रीनी ओळखथी विमुख हतुं. केवळ एकज तमन्नामां मस्तीदीपक झगावतां लोकशासनना परिचयमां तेओश्री घणाज ओछा आवता.

आबु पर्वतनी आसपास रमणीय भूमिमां विचरतां आपणा देवांशी संत शिवगंजनगरथी विहार करी नजीकमां आवेल गाम पोमावामां प्रवेश्या. एक रात्री पसार करी प्रभातमां विहार कर्यो. बीजा दिवसे सवारमां गामना पंचोने जाण थतां, तेओ एकत्र थई आपणा देवांशी संतने गाममां लाववाना अपूर्व उत्साहे, तेओश्रीए जे मार्गे विहार कर्यो हतो ते तरफ प्रयाण कर्युं. बे माईलना अंतरे निहाळतां एक वृक्ष नीचे आसनस्थिर बनी, शांतिना सौन्दर्य वितावता, ध्यानस्थ दशामां आपणा देवांशी संत बिराज्या हता. पंचोए विनय सहीत वंदन करी पोमावा गाममां पधारवा विनंति करी.

पंचोनी विनंतिनो स्विकार करी अति आनंद अने जय जयना गुंजार साथे आपणा देवांशी संत गामनी पादरे आवी पहोंच्या. हर्षघेला मानवसमुहे अपूर्व भावमीना हृदय संकेलतां दबदबा भर्युं सामैयुं कर्युं अने आपणा देवांशी संत गाममां प्रवेश्या.

पोमावा गाममां रतनचंद मनरुपजी नामना एक श्रेष्ठी वसता हता. तेमनी प्रतिष्ठा उज्वळ मनाती हती. आर्थीक स्थिती पण समय अनुसार ख्यातिमय हती. रतनचंद शेठना हृदयमंदिरमां एक रात्री कोइ दैविक भास थयो, अने आपणा देवांशी संत समक्ष उज्वळ कार्य करी लक्ष्मीनो सत्प्रयोग करवानी उत्कंठा जागी. तेमना धर्मपत्नि खुमीबाई तथा तेमना मातुश्री वनीबाइने वीशस्थानकनी ओळीनु व्रत उजववाना निमित्ते पांचथी सात हजार रुपीया जेटली रकमनो सत्प्रयोग करवानी भावना रतनचंद शेठे प्रदर्शीत करी. ते समयना कथन मुजब रतनचंद शेठ पासे वीसेक हजारनी रोकड अने चालीसेक हजार रुपीयानु जेवर (घरेणुंगांठुं) हतुं. तेमज परदेशमां चोखानो वेपार चालतो हतो.

रतनचंद शेठे पोतानी उत्कंठा पूर्ण करवा, उजमणु अठाई महोत्सव आदि शुभ कार्योनी तैयारीओ करी. अने आजुबाजुना गामोमांथी सगास्नेहीने नोतरवाना संदेशा पाठव्या.

रतनचंद शेठना आंगणे हजारोनी संख्यामां मानवमेदनी उमटी पडी. शेठ मासनो सख्त ताप होवाथी रस्ताओ उपर [illegible] कर्यां. आठ दिवस सुधी प्रभुभक्ति अने [illegible] भेदभाव सिवाय सहस्त्रगण्य [illegible] जम्यां. दीनगणनीना हजारो [illegible] वस्तुनी उणप रहेती नहि. [illegible] शेठे सुदी एकादशीना मंगळ प्रभाते

असंख्य मानवसमुहनी ठठ जामतां आपणा देवांशी संत समक्ष रतनचंद शेठना मातुश्री वनीवाइ तथा तेमनां धर्मपत्नि खुमी-बाईए वीश स्थानकनी ओळीनु व्रत उजव्युं. अने शेठे पोतानी उत्कृष्ठ भावनाओ दिव्य स्वप्न वितावतां पूर्ण करी. पांच-सात हजारना खर्चनी भावनाए प्रवेशतां, पोताना खुल्ला हस्ते सर्व रोकड रकम उपरांत जेवर (घरेणुंगांठुं) पण वेची नाखी साठेक हजार रुपीया जेवी मोटी रकम सतपंथे वापरी. पोमावा गामना मानवसमुहे जे कदापि निरख्युं न हतुं अने जेनी कल्पना सरखी पण उदभवी शकाय नहि तेवुं दिव्य स्वप्न प्रत्यक्ष निहाळ्युं. ते समये पोमावा गाम एक विराट नगर बन्युं हतुं. एना आंगणे सहस्त्रगण्य मानवमेदनी उल्टी पडी हती, अने विना भीतीए आनंदना ओजसो वहावतां जयजयकार मनायो हतो.

आत्मदीपक प्रगटावतां आपणा देवांशी संतना आशिर्वादथी पोमावा गाममां दैविक घटना बनी गइ अने जयजय-कार गवायो.

रतनचंद शेठे पण जेटली हार्दीक उत्कंठाथी सत्पंथे लक्ष्मी लूंटावी हती तेनाथी बमणी लक्ष्मी बीजा वर्षे चोखाना वेपा-रमां प्राप्त करी. हालमां ते रतनचंद शेठना पुत्र हेमराजजी विद्यमान छे अने तेमनी प्रतिभा पण पोमावा गाममां उज्वळ मनाय छे.

जीवन्मुक्त दशामां रमण करतां आपणा देवांशी संत मारकन्डेश्वर अने अजारी गाममां विराजता हता. मारवाडमां

नाणा स्टेशननी नजीकमां चामुन्डेरी करीने एक गाम आवेलुं छे. चामुन्डेरीनी प्रतिमा उज्वळ सनाय छे. उपाश्रय अने जैनचैत्यो तेना स्मारणचिन्हो छे. त्यांना मंदिरमां अंजनशलाका अने प्रतिष्ठा महोत्सव उजववानो हतो. जेनी भावभीनी तैयारीओ संकेल्तां शुभ मुहूर्त नियत थयुं हतुं. मुहूर्तनो समय नजीक आवतां गाममां अग्निनी तथा चोरनो भय उत्पन्न थवाथी, मुहूर्तनो वखत शुभ नथी एवी गामलोकोमां शंका उभी थई हती. गामना पंचो आ समये विषम मुश्केलीमां शमातां शान्तिने माटे शुं करवुं ए विचार-श्रेणीमां गुंथाया हता.

चामुन्डेरी गामना पंचोना केटलाक गृहस्थो आपणा देवांगी [illegible] मन्दिरमां [illegible] तेओए गामना केटलाक प्रतिष्ठित [illegible] साटासाट करी. अंतमां एवुं नियत थयुं के आपणा [illegible] सर्व घटनाओनुं निवेदन [illegible] तेओश्रीनी छायामांज शुभ कार्यो उजववा [illegible] चामुन्डेरी गाममां पधारवा विनंती करवी.

[illegible] पंचो आपणा देवांगी संत समक्ष अजारी [illegible] हृदये आवी पहोंच्या. विनयपूर्वक वंदन [illegible] करतां शांति थवा आशिर्वादनी [illegible] चामुन्डेरी गाममां पधारवा माटे अत्यंत [illegible] प्रदर्शीत करी.

आवा संजोगोमां तेमनी विनंतिनो स्वीकार करी आपणा देवांशी संत चामुन्डेरी तरफ विचर्या. विनंति करवा आवेला पंचो हर्षनी छोळो उछाळता पोताना गाम तरफ सिधाव्या अने आपणा देवांशी संतना पधारवाना शुभ संदेशथी गाम लोकोने वाकेफ कर्या. गामनो मानवसमुह पण भावभीना हृदये शुभ समाचार श्रवण करी हर्षीत बन्यो. गई कालनी विषम भीती आजथी विराम थवा मांडी. दुःखना घेरायेलां वादळां विखरातां गाममां अपूर्व स्नेहभर्यो हर्ष समृद्धिनो सूर्य प्रकाशवा मांड्यो अने आनंदना ओजसो छवायां. आपणा देवांशी संत चामुन्डेरी गाममां प्रवेश्या अने तेओश्रीना पधारवाथी तमाम भय शांत थइ गयो.

हर्षसमृद्धिमां दिवाना बनेला चामुन्डेरी गामना पंचोए आपणा देवांशी संतना आदेश मुजब जाजम बीछावी अने जे कल्पना मात्रथी पण ना निरखी शकाय अने संभवीत न हतुं तेवुं दिव्य स्वप्न वितावतां बोलीनी आवकमां एक लाख ने एंशी हजारेक जेटली मोटी रकमनी आवक थई.

चामुन्डेरी गामना आसपासना गामवाळाओ एकत्र थई जमता न हता ते कलह पण विराम पाम्यो अने अति उछरंगे संवत १९८४ना जेठ सुद एकमथी सातम सुधीमां प्रतिष्ठा महोत्सवनुं शुभ कार्य आपणा देवांशी संतनी छत्रछायामां समाप्त थयुं.

आसपासना गामोमांथी असंख्य मानवमेदनी उलटी अने कोईपण वस्तुनी उणप वगर जाति के संप्रदायना भेदभाव वगर नवकारशीना जमण थया के जे आपणा देवांशी संतनी लब्धिनीज घटना बनी गई.

पोरवाल संमेलन

संवत १९८९ना चैत्र वद एकम, बीज अने त्रीजना रोज श्री वामणवाडजी तिर्थनी रमणीय भूमीमां अखील भारतना जैन श्वेतांबर वीशा पोरवाल ज्ञातीनु संमेलन एकत्र थवानु हतुं तेना कार्यवाहको आपणा देवांशी संतने पधारवानी विनंति करवा अवचळगढ मुकामे आवेला. तेओए अत्यंत तमन्ना दर्शाववाथी तेओनी विनंतिनो स्वीकार कर्यो. बाद अवचळगढथी वामणवाडजी तिर्थ तरफ विहार शरु कर्यो. रस्तामां आवता गामोगाम हजारोनी मानव मेदनीने पावन करता करता संवत १९८९ना चैत्र सुद बारसना रोज आपणा देवांशी संत वामणवाडजी तिर्थमां पधारी गया.

पोरवाल संमेलननी पुर्णाहुतीना समये मारवाडना श्रीसंघ तरफथी आपणा देवांशी संतने योगलब्धि संपन्न राज राजेश्वर अनंत जीव प्रतिपाळकनां बिरुद अर्पण करवामां आव्या. अने ते समये मारवाडमां रुपगता चुडाने बंध करवानी घणीज लोकोए तेओश्री समक्ष प्रतिज्ञाओ लीधी.

श्री वामणवाडजी तिर्थभूमिमां आपणा देवांशी संतना दर्शनार्थे आसपासना गामोमांथी असंख्य मानवमेदनी उल्टी हती के एक मास सुधी श्री वामणवाडजी तिर्थ एक भव्य शहेर समु दिसतुं हतुं, एटली वधी मानवनी ठठ जामेली रहेती.

श्री वामणवाडजी तिर्थभूमिमां ते समये शिरोही इलाकाना अट्ठाशी गामना लगभग २५० ना आशरे वृद्ध रायकाओ दर्शनार्थे आवेला ते सर्वेने आपणा देवांशी संते प्रतिबोधी शुद्धाचार पाळवानी प्रतिज्ञाओ करावी अने हरेक गाममां ते मुजब पालन करावबानी शुभ सुचनाओने सर्व जणाए मान्य करी.

सुरिसम्राट पद

संवत १९९० ना कारतक सुद पुनमना रोज श्री वामणवाडजी तिर्थभूमिथी दुजाणा निवासी एक गृहस्थ तरफथी नानी पंचतिर्थीनो छररी पाळतो संघ काढवामां आव्यो हतो. आसपासना गामोमांथी आशरे पांचेक हजारनी मानवमेदनी उल्टी हती. पंचतिर्थीना गामोमां फरी मागसर सुद बीजना रोज श्रीसंघ वीरवाडा मुकामे पधारी गयो. ज्यां गामनी पादरे एक वृक्ष नीचे आपणा देवांशी संत बिराजमान हता. त्यां एकत्र थयेल मानवसमुहे तेओश्रीने जगतगुरु सूरिसम्राट पद अर्पण कर्यां हतां. जे समये मुर्शीदाबाद निवासि जगतशेठ तथा बीजा घणाज प्रतिष्ठित कुटुंबो हाजर हतां.

इन्द्र तणी वृष्टि [illegible] छे
दिव्य पुरुष पाणी तणा थयो दिव्य [illegible]

हिंदु नरेंद्रो तथा पालनपुरना नवाब साहेब, पालनपुरना नाना सामंतो एजन्ट टु धी गवर्नर जनरल साहेब तथा बीजा ओफीसरो तथा राजवीओए आपणा देवांशी संतने [illegible] करवामां आवेल जगतगुरु स्वरूप [illegible] छे. अने गोलवाड प्रांतीय जैन कोनफरन्से पण योग्य ठराव करी अनुमोदन अर्प्युं छे.

तरुवर सरोवर संतजन
चोथा वरसा मेह
परमारथ के कारणे
चारे धरीया देह

महान अने देवांशी विभूतिओ हमेशां जगतना कल्याण माटेज जन्म धारण करे छे अने विश्वकल्याण एज तेओश्रीनो ध्येय होय छे.

विसलपुरनो प्रतिष्ठा महोत्सव

मारवाडमां एरनपुरा नजीक विसलपुर गाममां आवेल जीनालयना प्रतिष्ठा महोत्सवना दिव्य प्रसंगे आपणा देवांशी संतने विसलपुर पधारवा त्यांना मानव समुहनी आदर्श भावना हती अने प्रतिष्ठा महोत्सव आदिनु तमाम कार्य तेओश्रीना शुभ हस्तेज दिपाववानी तेओनी खास उमेद अने आत्म-निश्चय हतां.

प्रतिष्ठा महोत्सवनो कार्यक्रम जाहेर थतां आसपासना गाममांथी हजारोना प्रमाणमां मानवमेदनी विसलपुर गाममां उतरी पडी हती. आ समये विसलपुर गाम एक विराट नगर बन्युं हतुं. गरमीनी ऋतु होइ आवनार हजारो माणसोने पाणी पुरुं पाडवानी महान मुश्केली उभी थइ हती.

आपणा देवांशी संत पण श्री बामणवाडजीथी विचरतां विसलपुर नगरमां पधारी गया. गाम लोकोए तेओश्री समक्ष पाणी संबंधनी मोटी मुश्केली व्यक्त करी. तेओश्रीए आशिर्वाद अप्यों के ज्यांसुधी उत्सवनी पुर्णाहुती नहि थाय त्यांसुधी पाणी अखूट रहेशे. आटला कथन बाद गामलोकोमां हिंमत आवी. आठ दिवस सुधी नवकारशीना जमणमां बीन गणतीना हजारो माणसो जमवा छतां लब्धिना अद्‌भूत प्रभावथी कोइपण वस्तुनी उणप रहेती नहिं. संवत १९९१ वैशाक सुद दशमना रोज अंजनशलाका अने प्रतिष्ठा महोत्सवनां शुभ काम आपणा देवांशी संतना शुभ हस्ते जय जयकार साथे सिद्धिने वर्यां के जेनी दैविकता आलेखी शकाय तेम नथी.

युग प्रधान

एकत्र थयेल असंख्य मानवमेदनी अने श्री संघे आपणा देवांशी संतने ते समये युग प्रधान पद अर्पण कर्युं. जे समये तेओश्रीना मस्तक उपर सोनामहोरो चांदीनाणुं आदीनी वृष्टि करवामां आवी हती. अने स्त्रीओए साचा मोतीनो स्वस्तिक रच्यो हतो. जगतशेठनो इल्काब वर्षो थयां जेओने अर्पायेलो

छे ते मुर्शिदाबाद निवासी शेठश्री जगतसिंहजी तथा जोधपुर स्टेटना ओफीसरो आदि बीजा घणाज प्रतिष्ठित कुटुंबो ते समये त्यां हाजर हतां.

आपणा देवांशी संतनी असंख्य दैवीक घटनाओ छे के जेने आलेखवानो आ स्थळे पूर्ण अवकाश नथी. तेओश्री एक स्थान उपर विराजता होवा छतां जुदा जुदा स्थळोमां श्रद्धापूर्ण मानवोने दर्शन आपे छे. जीवन्मुक्त दशामां रमण करता आत्ममस्तीना पूजारी आध्यात्मिक योगना अधिकारी महान पुरुषोना पवित्र दर्शनमात्रथी संसारिक व्याधिओ विरामे छे अने असाध्य रोगीओना रोग विराम पामे छे. जे कल्पनामां न होय ते प्रत्यक्ष निहाळाय छे अने अशक्य घटनाओ शक्य बने छे. तेओश्रीना अद्भूत प्रभावथी असंख्य मानवो पुन्यमार्गे प्रवेश्यां छे. आजे विश्वनी चोतरफ तेओश्रीनो जयघंट गाजी रह्यो छे.

पूज्य बनवानो दावो नहि करतां पूजक बनवानी साची अभिलाषा, गुरु बनवानो दावो नहि करतां शिष्य बनवानी साची मनोदशा, आध्यात्मिक शांति अने जगतकल्याणनी आदर्श भावना तेओश्रीना रोमेरोममां गुंजार करी रही छे. तेओश्री ज्यां बिराजे छे त्यां चोथो आरोज (सतयुग) वर्ते छे. जंगल मटीने विराटनगर बने छे, अने गाम मटीने शहेर बनी जाय छे, जींदगीमां निहाळ्युं न होय तेवा अद्वैत दृश्यो निहाळाय छे, अने आनंदनोज सागर व्रपाय छे.

आपणा देशांशी संतनां

बोधवचनो

कंगालमां कंगाल मनुष्यमां पण दिव्यता गुप्तपणे बेठेली छे. हुं अंदरने पूजनारो छुं.

वस्तुनी पीछान करवानु पुस्तको द्वारा थइ शके. पण पुस्तकोनु ध्येय तेज आत्मज्ञान. ज्ञाननी हद ते परमपद.

तत्वने समज्यो नथी त्यां सुधी उपर उपरनी बधी एकटींग छे.

जे सत्य छे ते मारो धर्म छे. बहारनी तकलीफ शी वीशादमां ? अंदरनी शांति वगर बधुं नकामुं छे.

विवेकानंद ए पंडित हता. अने स्वामी राम ए जबरजस्त आत्मार्थी हता.

प्रवृत्तिमांथी निवृत्ति ल्यो. एटले निवृत्तिमय प्रवृत्ति करो.

वनी शके तो तमारा जीवनथी ने छेवटे तमारा विचारोथी बीजाने पवित्र करो.

महानुभाव ! मारे जे जोइए छे ते तारी पासे नथी अने तुं कृपा करीने मने आपवा मागे छे तेनी मने परवा नथी.

विश्व मारुं मित्र छे ने हुं सौनो मित्र छुं.

हुं त्यागी छुं ए भावनानो त्याग तेज साचो त्याग करी शकाय.

शांतिमय जीवन एज खरुं जीवन छे. एकान्तमां आनंद छे. ॐकार मंत्रना ध्यानमां परम सुख छे.

मनुष्यनु जीवन एवुं होय के जेनी देवताओ पण यात्रा करवा आवे. एवुं जीवन जीवजो.

भांग पीघेला मनुष्यने जेम छाश पीतां नीसो उतरे छे तेम आ संसारमां संसारनी भावनाथी खरडायेला आत्माने शुद्ध करवा ॐकार मंत्रना जापनी जरुर छे. सहु आत्माने शुद्ध करवा मथजो.

लघुतासे प्रभुता मले प्रभुतासे प्रभु दूर,
लघुता वीन प्रभुता नहि लघुता घटमां पूर.



इंदोरना सरदार माधवराव विनायकराव किबे, एम. ए. ना हृदयोद्‌गारो

ज्यारे इंदोरथी अमो आबु जवा माटे निकळ्या, त्यारे “ टाइम्स ओफ इन्डीआ ” वांचता तेमां “ आबुमां महात्मा श्री शांतिविजय रहे छे अने ते दिव्य शक्ति धरावे छे. तेओश्रीने युरोपीयन, पारसी, जैन, मुस्लीम, हिन्दु, दरेके दरेक पूज्य माने छे. ” आ प्रमाणे वांचता अमारा मनमां पण विचार आव्यो के अमारे पण तेमने मळवुं जोइए. आथी अमो पण त्यां गया, गुरुदेव शांतिविजयजीने जोया त्यारे अमोने मनमां थयुं के ए कोइ दिव्य पुरुष तो छेज. अमो कांइ पुजनीक आदर्श तरीके मानता नहिं.

पण हवे तो अमो कोइ अजब देवरत्न समज्या छीए अने जेम जेम अनुभव वधतो गयो तेम तेम अमोने प्रतिती थती गइ के ए तो कोइ अजब दिव्य पुरुष छे. ए महान पुरुषने ज्यारे आपणे जेवी जेवी भावनामां जोइए छीए तेवी तेवी रीते तेओ पोते देखाय छे. प्रथमथीज दुनियाने अंधविश्वासमां बीजा साधुओ मळेल छे एटले आपणे आवा महान देव पुरुषने ओळखी शक्या नहि. कारण के जगत आजे साधुओ माटे अविश्वास करे छे ए वात बरोबर छे; दुनियामां डोळ करनाराओ अने पांडित्य भरेली वाक् चातुर्यता बताव-नारा घणा पुरुषो साधु वेशमां जगतने भरमावे छे. अने एवा

असाधुओने पण माननारा अने पूजनारा अंधश्रद्धाळुओ मळी जाय छे.

एमनो उपरनो देखाव तद्दन भोळो अने सादो छे. ज्यां सुधी आपणने पूर्ण अनुभव नहिं थाय त्यां सुधी एमज लागशे के ए तो तद्दन सामुली साधारण माणस छे. गुरुश्री शान्तिविजयजीनो उपरनो देखाव जुदो अने अंदरना गुरुदेव शांतिविजयजी जुदा छे. आजे दुनिया तो उपरनो डोळ डमाक जोइने अंधश्रद्धामां फसाइ जाय छे, अने ज्यारे पाछळथी अनुभव थाय छे त्यारे श्रद्धाहिन्य बनी जाय छे.

साधुनुं नाम जे पवित्र छे ए नामथी पोते कांइ पवित्र थतो नथी. धारो के कोइनुं नाम राम, कृष्ण, ईश्वर, जरथोस्त, [illegible]. अने कोइनुं नाम इशु छे. हवे एवां नाम धारण [illegible] कांइ पोते तेवा महान पुरुष थइ शकता नथी. धारो के [illegible] साधुओना वेषज पुजनीक गणाता होय तो पछी [illegible] गणतरी थाय छे तेवीज रीते तेमज बकराना [illegible] चडाववाथी कांइ बकरो सिंह थतो नथी [illegible] बळवान होय तोज खरेखरो सिंह [illegible] छे. धारो के नाटकमां एक श्रीमंत माणस ज्यारे [illegible] त्यारे मामुली माणस थाय छे; तेथी ते [illegible] तेवीज रीते दुनियाना धर्मा- [illegible] होत तो आजे दुनिया

मुक्तिपुरी बनी होत अने दुनियाना महान पुरुषोने ओळखाव्या होत. ए महान आत्माओने ओळखवा माटे पण महान विचारक थवानी जरुर छे.

जो ए महान पुरुषना आशिर्वाद मळे तो दुनियाना मोटा मोटा नामी डोकटरोए पण जेने माटे आशा छोडावी दीधी हती, तथा ज्योतिषोए पण जेने माटे हाथ खंखेरी नंखाव्या हता, तेवाओ पण एमना आशिर्वाद वडे सारा थइ गया छे. जेने आपणे साधु कहीये, जेना दर्शन वडे आपणुं पाप नष्ट थइ जाय, ए साधुता कांइ जुदीज वस्तु छे. गुरुदेव शान्ति-विजयजीने तो बधा ओळखे छे पण आपणी कांइ महान पुन्याइ हशे तोज अंदरना गुरुदेव शान्तिविजयजीने ओळखी शकीशुं. तेज दिवसे आपणे आशिर्वाद खरेखरो मेळव्यो कहेवाशे. विशेष शुं कहुं? एमनो आशिर्वाद एटलो बधो बळवान छे के जे केसने माटे दरेके दरेक माणसोए आशा छोडी दीधी हती तेनो महान रोग पण मुक्त थयो, ए मारो पोतानो खुद अनुभव छे.

हुं तो दुनियाना महान योगेश्वर तेमने समजुं छुं. अहाहा! दुनियामां आजे एवा देवरत्न छे जेने कोइ ओळखी शक्या नथी. कारण के एमनी पासे सिंह अने वाघ जेवा क्रूर जनावरो पण पाळेला जनावरोनी माफक आवी बेसी जाय छे. एवा महान पुरुषनो भेटो थवो ए कांइ साधारण वात नथी. एकवार तो दरेके दरेक मनुष्ये जरुर एमनां दर्शन

करवां जोइए, एवी मारी दरेके दरेकने भलामण छे. एमनो जे मार्ग छे ते सत्य छे. मारुं ते सत्य नहिं पण सत्य तेज मारुं छे एवो गुरुदेवनो दरेकने एकसरखो उपदेश छे. गुरुदेव पोते जाते आहिर (क्षत्रिय) कुळमां जन्मेला अने दरेके दरेक प्राणी उपर समभावना राखवी एवो एओश्रीनो उपदेश छे अने विश्वनुं कल्याण थाओ एवी भावना छे.



आचार्य श्री विजयकेसरसूरीजीना

अमदावादमां अंतिम उद्‌गारो

"बृहत् जीवनप्रभा तथा आत्मोन्नतिकारक वचनामृतो" नामना पुस्तकना ३५२ मा पानामांथी टुंक सार.

पांचसनी मवार थइ गइ, झाडा वंध थइ गया हता. पोते पोताना समुदायने जणाव्युं के आबुथी योगीराज श्री विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराज आवीने मने मळी गया, अने तेमणे कह्युं छे के हवे जवानी तैयारी करी ल्यो. प्रथम में तेमने एक वखत कह्युं हतुं के मारा अंत समये मारी खबर लेजो.



तपस्वी मुनिश्री मिश्रीलालजीना
आन्तरिक उद्गारो

स्थानकवासी जैन (पाक्षिक) अमदावाद ता. ११-१-३७ ना अंकमांथी.

२५६ मा उपवासनी रात्रे मने एक दिव्य प्रकाश देखायो. तेमां आबुवाळा योगीराज आचार्यश्री विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराजनां दर्शन थयां. तेमणे आदेश आप्यो के तमारी हठ छोडी दई पारणु करो. आथी पूर्ण श्रद्धा थई के गुरुदेवनो जे हुकम छे तेनो कुदरत साथे संबंध छे.

प्रथम ज्यारे आबुथी तारद्वारा ते योगीराज गुरुदेवे पारणु करवानी आज्ञा करी, त्यारे हुं एक विश्वप्रेमी महापुरुष तरिकेनी श्रद्धाथी पर हतो. ज्यारे हुं तेमनी पासे रह्यो तेमना समागममां आव्यो त्यारे पण मने संपूर्ण श्रद्धा न हती अने हुं एम समजतो के तेमनो अने मारो धर्म जुदो छे. तेमज बीजी अनेक शंकाओ साथे केटलाक माणसो तेमनी विरुद्ध बोलता होवाथी ते पुरुषनी यथार्थतानी मने पुरेपुरी श्रद्धा न हती.

परंतु २५६ मा उपवासे मने तेमनो भास अने प्रकाश थवाथी मारो तेमना प्रत्ये जगतना महात्मा पुरुषो पैकीना एक होवानो विश्वास स्थापित थयो, अने तेथी तेमनी आज्ञाने कुदरती प्रेरणा समजी में पारणु कर्युं छे.

दिल्हीना स्टेटसमेन पत्रना ता. ७–१–३६ ना अंकमांना अंग्रेजी लखाण उपरथी गुजराती भाषांतर.

एक अर्वाचीन चमत्कारीक योगी

हीझ होलीनेस योगीराज, जगतगुरु, युगप्रधान, आचार्य सम्राट श्री विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराज मारवाडमां सरस्वतीना अरण्यमां बिराजे छे. प्रथम ते जग्या एक वेरान जंगलरूप हती. परंतु गुरुदर्शनाभिलाषी हरेक कोमना माणसो आववाथी ए स्थान भरपुर शहेर जेवुं लागे छे.

एक धनवान वेपारीए ए स्थानमां जमण कर्युं हतुं जेमां एक हजार मानवना खोराकनी सगवड करी हती. परंतु गुरुदेवना दर्शन माटे सांज सुधीमां पांचेक हजार माणस आवी जवाथी कार्यवाहको मुंझवणमां पडया. परंतु गुरुदेवना आशिर्वादथी तमाम माणसो भोजन करी शक्या अने पछीथी जोतां पांचसो माणस हजु जमे तेटलो खोराक वधी पडयो हतो.

गुजराति पंच (अठवाडीक) अमदावाद ता. ६–१–३६ना अंकमां पण "चमत्कारिक जैन योगी" शीर्षक हेठळ आ मतलबनुं लखाण प्रसिद्ध थयुं छे.



अहिंसानो पडह

वसंत तिलका

जय घोषणा गजावी हिंसा वचावा
संयम वीणा बजावी हिंसा वचावा
साधुत्वता दिपावी हिंसा वचावा
हाकल करी जगतमां हिंसा वचावा

अहिंसाना अपूर्व सिद्धांतने उज्वळ बनाववानी धगशमां आपणा देवांशी संते जीवन नैयाने आगळ धपावतां विश्व प्रेमना अमोला उपदेशने वषावतां जाती अने भेदभाव वगर जेवा के युरोपियन पारसी वैष्णव आदि हरेक कोमना मानवो तथा राजा महाराजाओ आपणा देवांशी संतनी प्रतिभा श्रवण करी चरणोमां झूकवा लाग्या. अने दिनप्रतिदिन आत्मकमळ खीलतां खीलतां चारे दिशामां अहिंसानो ध्वनि गाजी उठयो.

जोधपुर प्रदेशमां जसवंतपुरा करीने गाम आवेलुं छे. ज्यां सुदा नामनो पहाड छे. संवत १९७३नी सालना चातुर्मासमां आपणा देवांशी संत ए सुदाना पहाडमां विराजता हता, सुदाना पहाड उपर एक चामुंडा देवीनु मशहुर मंदिर आवेलुं छे. जोधपुर इलाकामां ए मंदिरनी प्रतिभा अद्वितीय मनाय छे. दशेरा अने नवरात्रीना तहेवारमां ए देवीना मंदिरे धर्मना

बहाने मुंगा प्राणीओनो भोग अपातो हतो. अने घणाज अमोल प्राणीओनी हिंसा थती हती. ते हिंसा आपणा देवांशी संतना अद्भुत प्रसादथी पूजारी विगेरेए बंध करी हती.

मार्कंड ऋषिना आश्रमनी आसपासना अरण्योमां एवो जंगली मानवसमुह वसे छे के जेओने भील अने मेणा तरिके ओळखवामां आवे छे. ते जात एटली बधी अज्ञान अने जंगली छे के मात्र कपडांनी खातर पण मानवनो संहार करी नाखे. एवी [illegible] जातिमां पण आपणा देवांशी संते पोताना दिव्य प्रसादनी झांखी आपी असंख्य जीवात्माओने मद्यपानथी विमुख बनावी तेओना बाळकोने सन्मार्गे प्रेरवा मार्कंड ऋषिना आश्रमनी [illegible] आवेला श्री सरस्वतिना स्थानमां विद्या-[illegible] [illegible] [illegible]मां आव्युं छे. ज्यां ए भील अने मेणा [illegible] जातिना बाळकोने विद्यादान आपवामां आवे छे.

[illegible] [illegible]ना पूर्वाचार्यो अने तेओना सिद्धान्तो स्पष्टपणे [illegible] अहिंसा ए [illegible]कनो मुख्य धर्म छे. जेवी रीते [illegible] [illegible] आखुंये जीवन अहिंसाना पंथे झुकाव्युं [illegible] आपणा देवांशी संते पण अहिंसानी विजय-[illegible] [illegible] [illegible]वा अपूर्व जहेमत उठावी छे. अने [illegible] [illegible] [illegible] प्रतिज्ञाए धपावी रह्या छे.

[illegible] [illegible]८ [illegible] सालमां आपणा देवांशी संत आबु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रमणीय तिर्थभूमिमां विराजता

हता. चातुर्मासनो काळ निर्गमन करतां आसो मास अने दशेरानो तहेवार नजीक आवतां अद्वैत भावनाए प्रेराया. दशेराना तहेवारमां धर्मना व्हाने देवीना मंदिरोमां अज्ञान लोको मुंगा प्राणीओनी हिंसा करे छे, तेने बनती त्वराए अटकावी अहिंसाना अवर्णनिय सिद्धांतनो वधु प्रकाश झळकाववा दिव्य संकल्प जीवन निश्चय प्रदर्शित कर्यो.

जोधपुर इलाकामां आवां देवी मंदिरो अने मावडीओना नामथी ओळखातां घणाज स्थानो छे के ज्यां वधु प्रमाणमां मुंगा प्राणीओनां बलीदान अर्पाय छे.

दशेरा तहेवार निमित्ते थती हिंसाने बंध कराववा आपणा देवांशी संते हिंदस्तना देशी रजवाडाओमां तार द्वारा पोताना दिव्य संदेश पहोंचाडयो. आ दिव्य संदेशनो स्वीकार करी केटलाक राजवीओए कायमने माटे अने केटलाके अमुक समयने माटे हिंसा बंध करवा पोतपोताना स्टेटमां व्यवस्था करी, अने ते शुभ समाचारना तार तथा पत्रोथी प्रत्युत्तर पाठव्या. के जेनु स्पष्ट आलेखन आ नीचे कर्युं छे.

ता. ४-१०-३२

भावनगर (काठीयावाड) महाराजा साहेबनो तार "आपनी आज्ञा प्रमाणे हिंसा बंध करी छे."

जोधपुरना नरपतसिंहजी साहेबनो तार "हुकम माटे महाराजा साहेब पासे तार मुकुं छुं."

रोहीत ठाकोर-साहेब दलपतसिंहजी चीफ कमान्डींग ओफीसर जोधपुरनो तार "हिंसा बंध."

मालीया स्टेट ठाकोर साहेबनो तार "हिंसा बंध."

ओल स्टेट दरबार साहेबनो तार "हिंसा बंध."

पाटरी स्टेट दरबार साहेबनो तार "हिंसा बंध."

इंदोर स्टेट महाराजा साहेबनो तार "हिंसा बंध."

जोबनेर (जेपुर) ठाकोर साहेब नरेन्द्रसिंहजी अने स्टेट काउन्सिल केबीनेटनो तार "हिंसा बंध करी."

[illegible] ठाकोर साहेबनो पत्र. "कस्बा गाममां किरवा [illegible] स्थान उपर हजारो पशुओनु बळीदान अपातुं हतुं ते [illegible]. अने दशेरा तथा नवरात्रीए थती हिंसा पण बंध [illegible]."

[illegible] साहेबाजीनो पत्र तमाम प्राणी मात्रकी हिंसा [illegible] हिंसा करे उनके रु. ५१) दंड और [illegible].

[illegible] तरफनो पत्र "हिंसा बंध."

[illegible] स्टेट [illegible] साहेबनो पत्र 'हिंसा बंध.'

[illegible] स्टेट [illegible] साहेबनो पत्र "हिंसा बंध."

[illegible]

[illegible] स्टेट [illegible] साहेबनो तार "हिंसा बंध."

[illegible] स्टेट [illegible] साहेबनो तार "हिंसा बंध."

वडीया स्टेट, दरवार साहेबनो तार "हिंसा बंध."
थाणा देवळी स्टेट, दरवार साहेबनो तार "हिंसा बंध."
वांकानेर स्टेट महाराजा साहेबनो तार "हिंसा बंध."
ध्रांगध्रा स्टेट महाराजा साहेबनो तार "हिंसा बंध."
धोलपुर स्टेट महाराजा साहेबनो तार "हिंसा बंध."
सायला स्टेट ठाकोर साहेबनो तार "हिंसा बंध."
पेथापुर स्टेट ठाकोर साहेबनो तार "हिंसा बंध."
लुणावाडा स्टेट महाराजा साहेबनो तार "हिंसा बंध."
छोटा उदेपुर महाराजा साहेबनो तार "हिंसा बंध."
कालन्द्री ठाकोर साहेबनो तार "दशेरा अने नवरात्रीए थती हिंसा बंध."
खुडाला ठाकोर साहेबनो पत्र "हिंसा बंध किया."
सितामउ स्टेट महाराजा साहेबनो पत्र "हिंसा बंध."
ग्वालीयर स्टेट महाराजा साहेबनो संदेशो "हिंसा बंध."
राजपीपळा स्टेट महाराजा साहेबनो पत्र "हिंसा बंध."

ता. ६-१०-३२

नाना स्टेट ठाकोर साहेबनो पत्र "हिंसा बंध किया."
वांसदा स्टेट महाराणा साहेबनो पत्र "हिंसा बंध."

ता. ७-१०-३२

जुजावार नहारसिंह साहेबनो तार "हिंसा बंध."

ता. ८-१०-३२

रीवा स्टेट महाराजा साहेबनो तार "हिंसा बंध."

जाम्बुआ स्टेट (मालवा) दरबार साहेबनो तार "आ वर्षमां हिंसा बंध अने भविष्य माटे पण विचारीश."

[illegible] स्टेट महाराणा साहेबनो तार "हिंसा बंध."

[illegible] ठिकाणा (मालवा) ठाकोर साहेबनो पत्र "हिंसा बंध किया."

[illegible] ठाकोर साहेब राय बहादुर चेनसिंहजीनो पत्र "हिंसा बंध."

ता. [illegible]-१०-३२

[illegible] स्टेट महाराजा साहेबनो पत्र "हिंसा बंध."

[illegible] ठाकोर साहेबनो पत्र "हिंसा बंध."

ता. [illegible]

[illegible] स्टेट [illegible] साहेबनो तार "हिंसा बंध."

[illegible] दरबार साहेबनो तार "दशेराए थती [illegible]."

[illegible]

[illegible] ठाकोर साहेबनो पत्र "हिंसा बंध."

[illegible]

[illegible] ठाकोर साहेबनो पत्र "कुछ बंद और [illegible]."

[illegible]

[illegible] साहेबे दशेराने दिवसे [illegible] है.

शिरोही स्टेट महाराजा साहेबे दशेरा, नवरात्री तथा बीजा केटलाक दिवसो माटे हिंसा बंध करी छे.

चासोर पुडाणा जिल्ला जोधपुरना लगभग पांचसो गामोना जागीरदारोए ठराव कर्यो छे के "नवरात्री तथा दशेराना तहेवारोमां के कोइपण दिवसोमां तेओ जीवहिंसा करशे नहिं तेमज प्रतिबंध करशे. ते उपरांत दारु मांस तथा गांजानो पण सर्वदा त्याग करशे. अफीण खावावाळाओने ओछुं करवा समजावशे तेमज नवा कोइ खातां न शीखे एवी व्यवस्था करशे.

दीगोर देवडा (जसवंतपुरा) परगणाना बावन गामना लोकोए संदेशो मोकल्यो छे के "ते गामोमां दारु तथा जीवहिंसानो प्रबंध कर्यो छे.

रोल प्रगणाना सरदारे दारुनो त्याग कर्यो छे तेमज ढेढ जेवी ज्ञातीना सर्व लोकोए दारु तथा जीवहिंसानो त्याग कर्यो छे.

वेटरनरी होस्पीटल

माउन्ट आबुमां प्रवेशतां प्रथमज मोखरे आ होस्पीटल आवेली छे. के जे, गुरुदेव भगवंत श्री विजयशांतिसूरीश्वरजी एनीमल होस्पीटल तरीके विख्यात छे. आपणा देवांशी संतनुज ए स्मरणाचिन्ह छे. वेटरनरी होस्पीटलमां अशक्त जानवरोनी सेवा करवामां आवे छे. जेनी देखरेख युरोपियन लेडी मीसीस राइवर्स राइट Mrs. Rivers Wright तरफथी

राखवामां आवे छे. अने दर साल एना अंग्रेजी अने हिन्दी अहेवाल प्रकाशित करवामां आवे छे. आ होस्पीटलनी जग्या ते समयना राजपुतानाना मानवंता एजन्ट टु धी गवर्नर जनरल सर ओगील्वे साहेब Sir Ogilvie K. C. I. E., C. S. I., जेओ आपणा देशांशी संतना परम भक्त हता तेओए कायमना पट्टे होस्पीटलने अर्पण करेली छे अने आबु प्रदेशने माटे तेओ साहेब तरफथी एवुं फरमान प्रसिद्ध करवामां आवेलुं छे के "कोई पण जानवरने मारवुं के गोळीथी ठार करवुं नहि: तेमज झेरनी पीचकारी पण नहि आपतां वेटरनरी होस्पीटलमां मोकली आपवुं."



'वीर सन्देश' पत्र १६ मी डिसेम्बर १९३८ ना अंकमांथी

श्री योगिराजका अपूर्व चमत्कार

जीवदयाका महान कार्य कीया.

जोधपुर राज्यके बाली परगने में तखतगढसे एक कोस पर दीसीया नामक गाम है. वहां एक वीरके स्थान पर प्रति-वर्ष ५०० बकरोंका वध होता था. इस हिंसाको रोकनेके लीये मुंबईआलोतराकी जीवदया मंडली तथा तखतगढके जीवदया प्रेमी बहुत कुछ प्रयत्न कर रहे थे, परंतु उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुइथी.

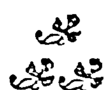
भावी योग्यसे जगतगुरु परम योगीश्वर श्री १००८ श्रीमद् विजयशान्तिसूरिश्वरजी महाराज ता. ६ डिसम्बर १९३८ को तखतगढ से विहार करते हुए लगभग ४ वजे वीटीया गांव पधारे. भोपेने यह बात सुन ली थी कि गुरुदेव इस रास्तेसे पधारने वाले हैं. और वे जब आवेंगे तब मुझको जीववध रोकनेका उपदेश देंगे. इस भयसे वह भोपा पहिले ही वहां से भाग कर दो कोस दूर दूसरे ग्राममें चला गया. गुरुदेवको मालूम हुआ कि भोपा यहां नहीं है. तब उन्होंने दो मिनिट ठहर कर बीर के स्थान पर द्रष्टी डाली और विहार कर वोंकली पधार गये.

रातको उक्त वीरने भोपाको स्वप्न देकर कहा कि "गुरुदेवने पधार कर अपने ग्रामको पवित्र किया है और मैं अब उनका शिष्य हो चुका हुं, इस लिये आजसे जीववध नहीं चाहता हूं. तू श्री गुरुदेव के पास जा और मेरी आज्ञा-नुसार जीववध नहीं करनेका गुरुदेवसे नियम ले कर आ." उसी रात स्वप्नमें भोपाको गुरुदेवने भी दर्शन दिये जीससे उसको द्रढ विश्वास हो गया.

ता. ११-१२-३८ तदनुसार मिती पौष कृष्णा ५ रविवार की दो पहरके ३ बजे सैंकडों विदेशी यात्रीओ तथा वोंकली संघ के समक्ष भोपा आया और विनयपूर्वक नमस्कार करके सब सत्य (स्वप्न आदि का होना) हाल कह सुनाया.

गुरुदेवने भी उसको समयानुसार उपदेश दिया. उपदेश सुन कर भोपाने यह नियम लिया कि "आज से मैं बीरके स्थान पर या कहीं भी जीववध न करूंगा." इसके बाद उसने गुरु-देवसे तथा श्रीसंघसे अर्ज किया कि उस वीर के स्थान पर कबूतरोंको दाना डलवानेके लिये अच्छा प्रबंध होना चाहिए. उस पर गुरुदेव के उपदेशानुसार तख्तगढ के जैनोंकी संघने इनकी व्यवस्था करनेका भार अपने उपर ले लिया.

जैन समाज का सद्भाग्य समझना चाहीये कि ऐसे प्रभाविक आचार्य विद्यमान हैं और अपनी इच्छा मात्रसे बडे बडे धार्मिक कार्य कर रहे हैं. प्रतिवर्ष होने वाले ५०० बकरों का वध आपके प्रतापसे रुकनेका समाचार सुन कर किस दया प्रेमी का हृदय हर्षसे प्रफुल्लित न हो जायगा? अधिष्ठायक देव से प्रार्थना है कि योगिराज दीर्घजीवी हों और अधिक से अधिक अहिंसा धर्मका प्रचार करते हुए जैन धर्मका डंका बजावें.



डंको बजाव्यो विश्वमां हिंसा बचावा तें प्रभो
जगव्या खरेखर राजवी हिंसा बचावा तें प्रभो
हाकल करी आ विश्वमां हिंसा बचावा तें प्रभो
मेणा अने भील जातीनां मानव बुझायां तें प्रभो

"अनिर्वचनीयम् प्रेम्नः स्वरूपम् मूकास्वादनवत्"

प्रेमका वर्णन करना अशक्य है. सर्व जीवोंपर प्रेम रखो.

आपणा देवांशी संते बोधेलो सदुपदेश—विश्वप्रेम

श्री दशवैकालिक सूत्रके पहिले अध्ययनमें लिखा है "धम्मो मंगलं मुकिट्ठं अहिंसा ॥" जीस धर्म में अहिंसा आदि प्रधान है वह धर्म सर्व धर्मोंमें मंगल और शिरोमणि है.

"दुर्गतौ पतताम् प्राणिनाम् धारयति इति धर्मः ॥" दुर्गति में गिरते हुए प्राणीओंकी रक्षा करता है वही धर्म है.

भगवान बुद्ध कहते हैं—आलस्य त्यागो, धर्मका आश्रय करो. धर्मका आचरण करनेसे इसलोक तथा परलोक में सुखी होते हैं. जीसको मेरी सेवा करना हो वह रोगीयोंकी सेवा करें.

"सेवा धर्मो परम गहनो योगीनामप्यगम्यः ॥"

रघुवंश में अधिकार आता है कि राजा दिलीपने अपने प्राणों की भी परवा न करते हुए गायों की सेवा की थी. श्री कृष्णजीने भी गायों की सेवा की थी.

वराहपुराण में लीखा है कि "नंदननैव गोपः ॥"

भारतका अक्षय खजाना पशु है जिनके पर सारा संसार निर्भर है. पशुओंकी सेवा करना मनुष्यका परम कर्तव्य है. वेदान्त में कहा हैः–

ब्रह्मचर्यं तपः सत्य मनुक्रोश क्षमा घृतिः ।
सनातनस्य धर्मस्य मूलमेतद दुरासदम् ॥

ब्रह्मचर्य, तप, सत्य, दया, क्षमा और धैर्य यही सनातन धर्मके दुष्प्राप्य मूल हैं.

जो मनुष्य सर्व प्राणीओंको अपने आत्मा के समान जानता हैं अर्थात् जिसने आश्रवका द्वार बंध कर दिया है और संवर भावमें रहता है उसको पापकर्मका बंध नही होता.

"सव्वे जीवाणि ईच्छंति जीविओ न मरीजिओ ॥"

(दशवैकालिकसूत्र अध्याय ४था गाथा ९मी)

सर्व जीवोंको अपना जीवन प्रिय लगता है. परंतु मरण की कोई चाहना नहीं करता है इस लिये हिंसाका त्याग करना चाहिए.

पहिले हिंसा किसे कहते है उसे संपूर्णतया समजना चाहिए. "हन् हिंसायाम्" हन धातुसे हिंसा शब्द बना. उसका अर्थ हनन करना अर्थात् मारना होता है वह हिंसा तीन प्रकारसे होती है. "मनसकेण, वायसकेण, कायसकेण," मनसे वचनसे और कायासे. किसीका मन दुःखाना, बुरा चिंतवन करना, कठोर वचन बोलना, अपने निमित्तसे दूसरों को कलेश कराना यह सब "भावहिंसा" है. शरीरसे किसीको तकलीफ देना, शस्त्रादिसे घात करना तथा प्रमाद के योगसे जीवका घात होना यह सब "द्रव्यहिंसा" है. जो क्रोध करता हैं वह बडा भारी हिंसक है. क्रोधसे कषाय बढता है. कषायका अर्थ संसारको आगमन देना. संसारचक्रमें परिभ्रमण कराने वाला ही कषाय है.

उपदेश तरंगिणि में कहा है:—

नशाम्बरत्वेन सितांबरत्वे न तर्कशास्त्रे न च तत्ववादे ।
न पक्षसेवा श्रमणेन मुक्तिः कषाय मुक्तो किल मुक्तिरेव ॥

न दिगम्बर अवस्थामें मोक्ष है और न श्वेताम्बर अवस्थामें; न तर्कवादमें या तत्त्वशास्त्रमें मोक्ष है; किन्तु कषायसे मुक्त होना ही मोक्ष है.

श्री शांतिनाथ प्रभुने अपने दशमें भव मेघरथ राजाके भवमें कबूतरको बचाया था. उसकी रक्षाके लिये अपने प्राणोंकी भी दरकार न की. इसी जीवरक्षाके प्रतापसे वह [illegible] भवमें तीर्थंकर और चक्रवर्ति हुए.

भगवतीमें अधिकार आया है "जयणा धम्मस्स जननी" [illegible] धर्मकी [illegible] है. "अहिंसा लक्खणो धम्मो" अहिंसा [illegible] है.

"[illegible] हणंसि [illegible] मेव" हे आत्मा तूं दूसरोंको [illegible] है [illegible] है. (आचारांगसूत्र के शीतोष्ण [illegible]

"[illegible] दुःख सहन करना, और जीवहिंसा न [illegible] मार्ग है."

[illegible] है [illegible] हिंसा के पीछे सब तरहका पाप [illegible] है [illegible]."

महाकवि तुलसीदासजी कहते हैं:–

दया धर्मका मूल है, पापमूल अभिमान;
तुलसी दया न छांडीए, जबलग घटमें प्रान.

जब पहिले स्वदया होगी तब परदया होगी. जीसको धर्म प्रति प्रेम है वह आत्मा ऐसा होना चाहिए.

"सर्व प्राणिषुः बन्धुभूतःस्यात् । क्रुद्धानामनुनेता । भीतानामाश्वासयिता । दीनानामभ्युपपत्ता । सत्य सन्धः परपुरुष वचन सहिष्णुः । अमर्षघ्नः परमगुणदर्शी । रागद्वेष हेतूनां हन्ता ॥"

सर्व प्राणिओंसे भ्रातृभाव रखनेवाला, क्रोधियोंको शान्त करनेवाला, भयभीतोंको धीरज देनेवाला, दीनोंकी रक्षा करनेवाला, सत्य प्रतिज्ञावाला, औरोंके कटुवचनोंको सहन करनेवाला, क्रोधको जीतनेवाला, शांतिके गुणोंको प्रगट करनेवाला, रागद्वेष जिनसे उत्पन्न हो उन कारणोंको जीतनेवाला होना चाहिए.

औरभी कहा है:–

"हिंसास्तेयान्यथा कामं पैशुन्यं परुषानृते संभिन्नालाप व्यापाद मभिध्या दृग्विपर्ययम् पापं कर्मेति दशधा कायवाङ् मनासस्त्यजेत् ॥" अतिचार

हिंसा चौरी और अन्याय ये तीनो देहके पाप है. चुगली कठोर बोलना, असत्य बोलना और अनर्थ बोलना ये चार वाणी

के पाप है. प्राणीओंको मारनेका चिंतवन करना, परगुणको न सहना और नास्तिकता यह तीन मानसिक पाप है. कायिक, वाचिक और मानसिक ये दश प्रकारके पापोंको त्याग देवें.

" अपकार परेऽपिस्यादुपकारः परः पुमान् ।
आत्मसत्सकलान्पश्येद् वेरिणो दूरतो वसेत् ॥ "

जो अपने साथ बुराई करे परंतु आप उनके साथ भलाई करे और सर्व प्राणीओंको अपने आत्मा समान देखे.

गीतामें श्री कृष्ण अर्जुनसे कहते हैं:—

आत्मौपम्येन सर्वत्र समंपश्यति योऽर्जुन ॥

हे अर्जुन, जो सब प्राणीओंको अपनी आत्माके समान देखता है वही परमात्माका भक्त है.

महर्षि व्यासजी कहते हैं:—

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम् ।
परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

अठराह पुराणोंका यही सार है कि परोपकार करना उसके समान कोई पुण्य नहीं है. और दूसरोंको दुःख देना उसके समान कोई पाप नहीं है.

हरेक धर्मशास्त्रोमें अहिंसा

वेद कहता है " माहिंस्यो पुरुषं जगत् " किसी भी प्राणीकी हिंसा मत कर.

भगवान बुद्धदेव का फरमानः—

Do to others which ye would have them do to you. Kill not. Cause no death.

जो व्यवहार आप दूसरोंसे अपने प्रति चाहते है, वैसा ही व्यवहार आप उनके साथ करो. किसीको मत मारो. किसीकी हत्या मत करो.

जरथोस्ती धर्ममें अहिंसाः—

जरथोस्ती धर्ममें पैगंबर साहिबका फरमान है कि "खास करके प्राणीओंकी रक्षा करना" 'पशुओंकी कतल करना' यह " अहुर मझद " 'बुरा बतलाता है.'

और भी कहा हैः—

जो सबसे अच्छे प्रकारकी जींदगी गुजारनेसे लोगोंको अटकाते है और जो पशुओंको मारनेकी खुशखुशाल सिफारीश करते हैं उनको 'अहुर मझद' बुरा समजाता है. (गाथा ३२-३३).

सज्जनो विचारों कि एक मेनाने किसी शेठके वहां रोटी खाई थी और समय आया तब उस शेठकी रक्षाके लिये उसने अपना प्राण दे दिया. तो गाय आदि पशु जो अपनेको घी दूध आदि देते हैं तो उनका तो अपने पर कितना उपकार है? इसका ख्याल अवश्य करना चाहिए. प्राणिमात्रकी रक्षा करना मनुष्यका परम धर्म है.

मुसलमानोंके शास्त्र क्या कहते हैं:—

खुदाने तो पहलेसे ही फरमान किया है कि तमाम जीवों पर रहीम करो. कुरान शरीफ की शुरुआतमें अल्लाताला खुदा के विशेषण "रहीम" दिया गया है.

"बीस्मल्लाह रहीमान्नुर रहीम" इस प्रकार मंगला चरण के बाद कहा गया है कि सर्व जीवात्माओं पर रहीम करो. "कुराने शरीफमें सुराने आममे" लिखा है कि "जो पशु पृथ्वी पर चलते हैं और जो पक्षी हवामें उडते हैं व कोई दूसरे नहीं है. वे भी अपनी तरह जीवात्मा है." अर्थात् उनको भी अपना जीवन प्रिय लगता है.

"लातो आजे बोखलकुला" हे मोहंमद दुनियाको विश्वास दे दे कि अल्लाकी दुनियाको कोई नहीं सतावे. अब देखनेका यह है अल्लाके संतान कोन है? क्या हिन्दू अल्लाके संतान नहीं? अगर मुसलमान ही अल्लाके संतान है तो फिर अल्ला पक्षपाती कहलाएगा. जब कि वह सबका मालिक है तो फिर हिन्दू मुसलिम पशुपक्षी सर्व उनके संतान हैं.

जहां हृदय दयासे भर जाता है वहां दूसरों के प्रतिहिंसाका भाव हृदयमें रहता ही नहीं.

महर्षि शाण्डिल्यने अपने सूत्रो मे कहा है:—

"अनिर्वचनीयम् प्रेम्नः स्वरुपम् मूकास्वादनवत्" प्रेमका वर्णन करना अशक्य है. सर्व जीवोंपर प्रेम रखो.

खिस्ती धर्ममें भी अहिंसा का उल्लेखः—

लोर्ड इसामसिहने अपनी छट्ठी आज्ञा में कहा है कि किसी भी जीवकी हिंसा मत करो, किसी भी जीवका थोडासा बुरा करना पाप है.

औरभी कहा हैः—

Thou shalt not Kill; Blessed are the merciful for they shall obtain mercy. (Jesus Christ)

तुं कभी हिंसा मत कर. दयाळु पुरुष सुखी होते हैं उन पर इश्वरका आशिर्वाद उतरता है. (महात्मा क्राइस्ट.)

मांसाहार निषेध

जो लोग मांसाहार करते हैं उनके प्रति महंमद पैगंबर साहेबका फरमान.

By no means will their meat reach their God nor their blood; but the Diety from you alone will reach Him.

प्राणीओंका मांस और, खून खुदाको नहीं पहोंचता है परंतु तुम्हारी भक्तिही केवल उसे पहोंचती है.

कंइ मांसाहारी जन कहा करते हैं कि मांस खानेसे शरीर बढता है और बलवान होते हैं यह बात भी बिलकुल जूठी और अप्रमानिक सिद्ध हूई है. क्योंकि मांसाहारी जानवरोमें इतनी ताकात नहीं होती जितनी शाकाहारी हाथीमें.

मांसाहारी जानवर इतने चपल नहीं होते जितने [illegible] हरिन, घोडे आदि.

युरोपियन विद्वान क्या कहते है ?

इ. स. १९०८ में " लंडन वेजीटेरियन एसोसिएशनके सेक्रेटरी मी. एफ. आइ. निकालसनने " १००० लडकोंको छ मास तक वनस्पतिके आहार के खुराक पर रक्खा था दुसरे और उतनेही लडकोंको " लंडन काउन्टी कौंसील " में मांसाहार पर रक्खा था. छ मास पश्चात उन दोनो विभागके लडकोंकी वहांके डोक्टरोने परीक्षा की. जीससे यह मालूम हुआ कि वनस्पतिके आहार पर रहने वाले वालकों अधिक प्रमाणमें वढ गया इतना हि नहीं लेकिन वे विल्कुल तंदुरस्त और अच्छी चामडी वाले वने.

प्रखर डो. हेग कहता है कि:—

जव कुदरतने मांस खानेवाले मनुष्यके लिये, मांसाहारी विकराल जानवरों के जैसा दांत वनाया नहीं तो फिर होझरी उस मांसको हजम करने के लिये कहांसे वनाई होगी ? तात्पर्य यह है कि मांसाहार कुदरतसे विरुद्ध है.

जिन जीवोंका आहार कुदरती रीतिसे मांसाहार पर ही है वे जानवरों मुहके वदले जीभसे पानी पीते हैं यह भी एक प्रत्यक्ष प्रमाण है कि मांसाहार मनुष्योंका आहार नहीं है.

शाकाहारी और मांसाहारी प्राणीओंके शारिरीक बनावटमें, स्वभावमें और रहनसहनमें भी प्रत्यक्ष भिन्नता मालूम होती है. अपने घोडे और कुत्तेको भी हरिन के पीछे दौडनेके बाद देखा होगा तो मालूम हुआ होगा कि घोडा जो शाकाहारी है पसीनेसे तर होगा और कुत्ता जो मांसाहारी है उसके पसीना बिलकुल नहीं निकलेगा. जीतने मांसाहारी प्राणी बिल्ली भेडिया आदि है उनके कभी पसीना नहीं निकलता है, परंतु मनुष्यको पसीना निकलता है इस लिये यह अवश्य शाकाहारी है.

मांसाहारी प्राणी कुत्ते आदि दौडना प्रारंभ करते ही हांफने लगते हैं और गर्मी आदिमें बडे परेशान होते हैं. उसके विपरीत हरिन आदि शाकाहारी प्राणी दौडना शुरु करते ही नही हांफते. मनुष्य भी तेज या धीमी चालसे चलता है तो हांफता नहीं है. इससे सिद्ध होता है कि हम शाकाहारी हैं.

मांसाहारी चित्ते बाघ आदि दिवसमें सोते हैं और रातको जागते है. इसके विपरीत बंदर आदि दिनको जागते हैं और रातको सोते हैं. डोक्टर और वैद्य कहते हैं "जो मनुष्य दिनमें सोता है वह आलसी और कम उम्रवाला होता है." हम रातको सोते हैं इससे मालूम होता कि हम शाकाहारी हैं.

परम दयालु महा ऋषिश्री वाल्मिकिजी रामायणमें कहते हैः—

मानिषाद प्रतिष्ठात्व मगमः शाश्वती समाः ।
यत्क्रौंचं मिथुनादेकमवधीः काम मोहितम् ॥

हे व्याध तुमने इस क्रौच पक्षीकी जोड भांगी इसके कारन तुम अनेक वर्षों तक प्रतिष्ठा नहीं पाओगे.

इससे भी यही सारांश निकलता है कि निरपराधी पशु पक्षीओंका प्राण लेना धर्मसे विपरीत है.

हिन्दु

हिन्दुओंके महान प्राचीन ग्रंथ "मेरुतन्त्रके तेइसवें पटल" में लिखा है:-

हिन्दुधर्म प्रलोप्तारो भविष्यंत्येक पत्रिणः ।
हीनंच दुषयत्येवं हिन्दुरित्युच्यते प्रिये ॥

शिवजी कहते है, हे प्रिय पार्वति, हीन्-हिंसा; जो हिंसा आदि दुराचार को दूर करे वे हिन्दु कहा जाते हैं. ख्याल करो कि हजारों वरस पहिलेसे भारतवासी हिन्दु कहे जाते थे तबसे अपनी मातृभाषा हिंदी कह जाने लगी.

हिन्दुः हिन्दवः हिन्दीः इति मेदिनी कोशः ।

हिन्दु शब्दका अर्थ है कि जो हिंसासे रहित हो. हि-न-दु इन तीन वर्णोंसे हिन्दु शब्द बनता है. संस्कृत वाणीमें दु-का अर्थ दूर करना है. अर्थात् हिन्-हिंसा को जो दूर करे उसको हिन्दु कहना चाहिए.

यह बात यवनोंके देशवृत्त (तवारीख) में लिखे श्री

व्यासजीके चरित्रसे भी स्पष्ट है. जैसे पारसियोंके मुख्य धर्मपुस्तक मस्तीरनाम जरथुस्त की पैसठवी आयत में लिखा है:—

"अकन् विरह मने व्यासनाम अज हिंदु आमद बसदाना कि अकिल चुनः लस्त" एक व्यास नाम ब्राह्मण हिंदसे आया, जीसके तुल्य कोइ पंडित नहीं है. इसके आगे १६३ वें आयत में लिखा है "चूं व्यास हिन्दी वलख आमद गस्तास्य जातुस्कल बख्वांद" जब हिन्दका रहनेवाला व्यास बलखमें आया तब इरानके राजा गस्तास्यने जातुश्कको बुलवाया. "मन मर्देअम हिन्दी निजाद" मैं एक हिन्दमें पैदा हुआ पुरुष हूं. फीर आगे लिखा है "बब हिन्द वाज तस्त" फिर वह हिन्दको लोट गया. इत्यादि बहु विस्तृत विदेशी ग्रंथ प्रमाणोंसे भी स्पष्ट हिन्द हिन्दु हिन्दी शब्दोंका प्रचार श्री व्यासजीसे पूर्व इस भारत में था और अब भी है. इसका कारण यह है जब हमारे विद्यावीर धीरपुरुषोंने हिंसा, हास्य, हास, हुंवद, हतोत्साह, हडचल, हडफुट, हिचक, ह्रीराहित्य (निर्लज्जता), हीनता, हेला (अपमान), हठता आदि हेय अवगुणोंका नाश कर; हर्ष, हित, हितू, हेज, ह्री (लज्जा), हल, व्यापार, हीनजन पालन, हिम्मत, हवन आदि हितकर पदार्थोंका चमकीला चन्द्रमा चमकायाथा तभीसे दीर्घदर्शी, गुणग्राही विदेशी लोग इस देशको हिन्द, निवासिओं को हिन्दु और बोलीको हिन्दी कहने लगे.

यहां पर कहनेका तात्पर्य यही है कि किसी द्वेषीने किये, हिन्दु शब्दके पूरे अर्थ पर ध्यान देकर बहके हुये लडके इस शब्दको घृणा दृष्टिसे न देखकर अपनी जन्मपूज्य मातृ-भाषाको हिन्दी नामसे ही पुकारते. मातृवत् सदा हितके लिये आराधन करे.

ब्राह्मण

" ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः " जो ब्रह्म (आत्मा) को जाने वह ब्राह्मण है.

क्षत्रिय और गोरक्षा

" क्षतात् त्रायते इति क्षत्रियः " प्रहारसे जो रक्षा करे वह क्षत्रिय है.

"गोब्राह्मण प्रतिपाल" शब्दसे क्षत्रियोंको संबोधन कीया-जाता है, क्यों कि गो ब्राह्मणकी रक्षा करना उनका कर्तव्य है. इस विषयमें मनुजीने कहा है कि " रक्तवस्त्रं शिरसि, हस्ते यष्टिका धारयति क्षत्रियः " सर पर लाल रंगका वस्त्र और हाथमें लाठी क्षत्रिय लोग धारण किया करते हैं. उसी कथनानुसार रायका कौम आज भी सर पर लाल वस्त्र और हाथमें लाठी धारण करती है. वराहपुराण में लिखा है " नन्द क्षत्रियः गोपालनात् गोपः " नन्द क्षत्रिय थे गो पालने

के कारण गोप कहलाये. यदुनन्दन भगवान श्रीकृष्णने भी ग्वालों सदृश्य गोरक्षा कर देशको गो पालनेका सन्देश दिया है. वशिष्ठमुनिने भी गो रक्षाके लीये कहा था पर राजा दिलीपने उत्तर दिया था कि "प्राणोत्सर्जनं कृत्वा गोरक्षां करोम्यहम्." अर्थात् गोकी रक्षा, में प्राणोकी भेट दे कर भी करुंगा. राजा सगरने भी गो रक्षा की प्रधानता दी है. इन्द्रराजाने कहा है कि गो का दूध अमृत के समान है. पाराशर आदि ऋषिओंने गायको श्रेष्ठ माना है. भीष्म पितामहने कहा है कि देव और मनुष्य गोमाता के पुत्र है. विराट नगरमें स्वयं सहदेव जोपीने गोकी रक्षा की थी. अर्जुनने भी छिपे वेशमें रहते हुए भी गोकी रक्षा की थी. इन प्रमाणोंसे सिद्ध होता है कि उस समय के क्षत्रिय गो के भक्त थे.

इस कलिकालके कठिन समयमेभी गायोंकी रक्षा करके भारतकी जनताको कृषि के लिये बैल तथा दूध, दही, घृत दे कर पालन पोषण कीया है. बहुत वर्षोंकी बात है जब भारत-वर्ष नहीं, हिंदुस्तान नहीं बल्कि दस्युओंका देश कहलाता था. तब सात सात समुद्रोंको पार कर गोपालकों ने हिन्दमें निवास किया था. वे वीर शब्द कहते हुये प्रदेशके संशोधन के लिये निकल पडे. उस समय उनके उपास्य देव अग्नि तथा सूर्य थे. जैसा कि–

ऋग्वेदसे प्रगट होता है कि —

“अभिसूर्य वर्ण [illegible]
कंतु चित्रः ॥”

अर्थात्—हे सूर्य तुमें हमें [illegible]
शान्ति हो, हे [illegible] यात्र [illegible].

इस उपरके मंत्रको पढते हुए [illegible] के समान पार मार करते हुये अपना अपना गोधन ले कर आगे चलते और जब जंगलमें रास्ता भूल जाते पशु गुम हो जाते तो [illegible] जाज्वल्यमान ऋचा का उच्चारण करके सारे वन [illegible] गुंजायमान कर देते थे.

अग्यव्यूति क्षेत्र मागन्म देवा उर्वी सति भूमिरम हरणामृत।
बृहस्पते प्रचिकित्सा गर्विष्ठा इत्था सत्तेजाश्चि इन्द्र पन्थानम् ॥

अर्थात्—हे देव! हम यात्रा करते हुये अपना मार्ग भूल गये हैं और वह प्रदेश, जीसमें पशुओंके लिये चारा आगे नहिं है. और इस विशाल प्रदेशमें केवल दस्युही रहते हैं. हे बृहस्पति! पशुओंकी खोजका मुझे रास्ता बता. हे इन्द्र! मेरे सेवक जो रास्ता भूले हैं उनको मार्ग बता.

वे जिस समय इस प्रकार वनमे घूमते फिरते उस समय उनको झोंपडीयोंमे रहनेवाले वृद्ध और स्त्रियां निम्न लिखित प्रार्थना करती थीं.

" उदानं व्ययनं उदानट् परायीण
आवर्तनं निवर्तनं मीय गोपान् वर्तनाम् " ।

गोपाल गायोंकी खोजमें गये हैं. वह सभी दिशाओंमें घूम कर सहीसलामत घर वापिस आवें.

पुनः पार्थना करते थे किः—

" संधि पूर्विणं विसर्गिकः स सिही पारधुरं पूषमिद कृतं विद."।

अर्थात्—हे सूर्य मेरी रक्षा करके हमें पुण्यका भागी बना. हमको दृढ बनाओ तथा हमारे उदर पूर्ण और रक्षा के लिये कुछ युक्ति करो.

इस प्रकार भ्रमण करते हुये विजयशील गोपाल आस-पासके देशोंको जीतते थे. यही गोपाल कृष्ण भगवान् के साथी बन कर कंस जैसे राजाको नष्ट किया था.

श्री कृष्ण भगवानने गीताके १८ वें अध्याय के ४३ वें श्लोक में कहा है किः—

शौर्य तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् ।
दानमश्वीर भावश्च क्षात्र कर्म स्वभावजः ॥

अर्थात्—शौर्य, तेज, धैर्य, बुद्धिमता, युद्धसे न भागना, दान, और स्वामी भाव यह क्षत्रियोंका स्वाभाविक कर्म हैं.

उपरके गुण रायका कौममें पाये जाते हैं. इस कौमका प्राचीन इतिहास देखनेसे ज्ञात होता है कि यह कितनी प्राचीन

है. इस कौमका रायका. रवारी तथा देसाई कहते हैं. राय और राजा ये क्षत्रियवाचक शब्द है. रायका यानी राज्य करना. मूल शब्द दरबारी है. जीसका "द" निकल जानेसे रवारी रह गया. देशाई याने देशमें प्रथम आये हुये जिसको देशीय, या ऊपरसे गुजरातिमें देशाई कहते हैं. उनका गोत्र वही है जो क्षत्रियोंका होता है. दुष्काल के समय में भी अन्य देशोमें जा कर भारत के धन, की जिस पर जगतका जीवन निर्भर था उन गायों की रक्षा की थी.

अकबर बादशाह के समय में भी दूध दही आदि वस्तुएं प्रचुर मात्रामें मिलती थी. जिसका कारन यह था कि उस समय गो-वध नहीं होता था.

गोरक्षा के लिये फ्रोगर्ड नामक पुस्तकमें महाशय आहुरखझदाने कहा है किः-

"Where cattle go on thriving, holiness is thriving, fooder is thriving and every reless-ngs of life is thriving,"

"जहां पशुकी वृद्धि होती हैं वहां पवित्रता, खाद्य पदार्थ तथा जीवनकी प्रत्येक वस्तुकी उन्नति होती हैं."

[illegible] S. A.) अमेरिकाके संयुक्त प्रदेश के (Minister [illegible]) कृषि विभागके प्रधान मी. राल्फ. ए. [illegible] ने [illegible] है किः-

"It is criming for any man who owns a cow, to sell a pint of milk or a pound of butter, before his children have milk to drink every day & butter to eat at each meal."

"किसी भी मनुष्य के लिये जो गाय रखता हो, यह वडे पाप की वात है कि अपने वच्चों के खाने के पूर्व, घी दूध या दहीको वेचे."

अमेरिका इंग्लेन्ड आदि मांसाहारी देशों में भी दूधकी आवश्यक्ता समझते हैं. फिर भारत को जो निरामिषी देश है गरीव लोग रहते हैं, लेकिन उन देशोंकी अपेक्षा यहां चौगुना घी, दूध महंगा है.

Indian Industrial Committee भारतीय औद्योगिक समितिकी रीपोर्ट का सारांश यह है कि:—

"Truely the cow is the Mother of all prosperities."

"गो सव प्रकार के उन्नति की जननी है. अर्थात् गोरक्षा से सव प्रकारकी उन्नति हो शकती है."

महाभारत के शान्तिपर्व में महाराज युद्धिष्ठिरने धृतराष्ट्रसे कहा कि:—"नहि गोप समः के चित्सन्ति लोके." । लोकमें गोके समान कोई नहिं है.

नीति का वाक्य है:—राजन् दधुक्षिस धेनु क्षिति मेतां ।
तेनाद्य वत्समिव लोक ममुं पुषाण ॥

हे राजन यदि इस गो रूपी पृथ्वीको दुहना चाहता है तो बछडे रूपी प्रजा की रक्षा कर. भावार्थ यह है कि गो तथा पृथ्वीकी रक्षा समभावसे करनेकी अनुमति दी गई है.

इस संसारमें ऐसा कोई भी नहीं है कि जिसको किसी न किसी प्रकार दूध वाले पशुओंसे काम न पडता हो. दूध, दही, घृत, कृषि, सवारी, बोझा ढोना, ऊन और बाल आदिके लिये संसारने उनको मान दिया है.

पाश्चिमात्य लोग कितने सभ्य होते हैं कि छोटेसे छोटे कामके लिये कृतज्ञता प्रगट करनेके लिये "THANKS" "आभार" कहते हैं. फिर दूधवाले पशु तो हमारा, कहीं अधिक उपकार करते हैं–फिर उनकी रक्षा हम क्यों न करें? उनकी रक्षा करना हम लोगोंका परम कर्तव्य है.

अतः आशा है कि Legislative Assembly & Council of States धारासभा और नरेन्द्र मंडळ इस बात पर विशेष ध्यान देंगे और दूध देनेवाले पशुओंकी रक्षा का कानून पास कर, देशकी गिरी हुई आर्थिक दशाको सुधारेंगे.

कितने ही राजामहाराजाओंने दूध देनेवाले पशुओंकी हिंसा बंद की है और राज्य शासन कर्ताओंने विश्वास दिया है कि यद्यपि यह कार्य बडा भारी है तो भी उसकेलिये वे धीरे धीरे बंद करानेकी कोशिश करेंगे. उसका मैं अनुमोदन करता हूं.

श्री केसरीयाजी तिर्थ

प्रतिज्ञा आत्ममां लीधी विचरीया सत्यना पंथे
अविरत प्रेम रेलाव्या लीधीती टेक उत्कंठे
जगतने मित्र सम जोता दिसेना वेरनी झांखी
भले हो जैन के विष्णु सरिता स्नेहनी राखी.

मेवाड प्रदेशमां उदेपुर नजीक श्री केसरीयाजी करीने जैनोनु यात्रानु महान स्थळ आवेलु छे. हिंदभरना जैन समाजमां ए तिर्थनी प्रतिभा अद्वैत मनाय छे. भव्य जीनालय अने धर्मशाळाओ साथे एनी विराट मनोरम्यता हिंदभरमां मशहुर छे.

श्री केसरीयाजी तिर्थमां जीनालयना पुजारी तरिके पंडा लोकोनी जजमानवृत्ति घणा वर्षोथी चालती आवे छे. जीनालयमां पूजन अने प्रक्षाल आदिनी बोली बोलाय छे. जेनी आवकनु प्रमाण दिनप्रतिदिन वधतां वार्षिक रुपीया दश हजार उपरांतनु थवाथी पंडा लोकोए ए आवक पोते मेळववा हकदार छे ते संबंधमां स्टेट समक्ष तकरार उठावेली. श्री केसरीयाजी तिर्थनो वहीवट अने देखरेख छेल्ला केटलाक वर्षोथी उदेपुर स्टेट करे छे. पंडाओनी जोहुकमीने लइ जीनालयमां केटलीक वैष्णव रीतीनी शरुआत थएली. वर्षो थयां जीनालय

उपर चढावेल ध्वजदंड पंडाओए उतारी नाखी जीनालयमां हवन आदि करी वैष्णव रीती मुजब त्रिकोणी धजा चडाववामां आवी हती.

जैन समाज आवा समये निंद्रावश बन्यो हतो. आटला बधा घोर अन्यायो थवा बाद तेनां आंतरचक्षुओ खुल्यां नहतां. पूर्व समयनी कीर्तिने उज्वळ राखवानी जहेमत धरावता समाजना सुभटो शांतिमां पोढ्या हता. साधुसंमेलनना सूत्रधारो अने पोतानाज स्वमुखे पोतानी प्रभुता मनाववनारा शासन-सम्राटो अजाण्या बनी जुदा पथे ज रमण करी रह्या हता.

जैनो अने पंडाओ वच्चे आ एक उग्र क्लेशाग्नि सळग्यो हतो. परिणामनी आशातो भावीना हाथ हती. परंतु पंडाओ पोताथी बनतुं करवानी घडीओ वितावता हता. जैन समाजना कोइपण किल्लेदारे आ बाबत विचारी होय तेवुं जणातुं नहतुं. प्रकाश अने अंधारनी स्थितीनो ख्याल करतां केवळ अंधकारज दीसतो हतो. वाक्यबाण फेंकनाराओ पोताना वाणी प्रवाहमांज त्रिकाळना दर्शावी दुंदुभी नाद बजावी रह्या हता.

आवा समये आपणा देवांशी संतनी आंतरगति ते तरफ खेंची अने पोताथी बनतुं करवानी प्रेरणाए आत्मनिश्चय व्यक्त कर्यो. विश्वप्रेमना पानने व्रपावतां जगत कल्याणनी भावनाए आध्यात्मिक पथे रमण करतां कोइ जीवात्मा साथे वेरझेरनी लागणी नहि राखतां सत्य कक्षाए पोतानी प्रतिज्ञा

जगत समक्ष जाहेर करी अने ते संदेशनी मेवाडना महाराणाने प्रथम हाकल करी. आ समये आपणा देवांशी संत श्री वामणवाडजीनी तिर्थभूमिमां विराजता हता.

जाहेर पेपरोमां नीचेनो संदेश प्रसिद्ध कर्यो, के "श्री केसरीयाजी तिर्थ अने पंडा वच्चे सळगेल क्लेशाग्निनो, मेवाड स्टेट तरफथी शान्तिभावे निकाल नहि आवे तो संवत १९९० ना फागण सुद तेरसना रोज मेवाडनी हदमां प्रवेश करी हुं उपवास शरु करीश." जाहेर पेपरोमां एवुं पण प्रसिद्ध करवामां आव्युं हतुं के "मेवाडना दिवान सर सुखदेवप्रसादजीनुं मृत्यु थोडा काळमां छे."

मेवाडना महाराणाश्री उपर रजवाडाओ तरफथी तारो करवामां आवेला के योगीराज उपवास आदरें ते पहेलां प्रथम तके शांति स्थापन करो. दुनियाभरनी चारे दिशामां आ संदेश फरी वळ्यो के फागण सुद तेरस सुधीमां श्री केसरीयाजी तिर्थमां शांति स्थापन नहि थाय तो योगीराज उपवास आदरशे.

आपणा देवांशी संतने मेवाडनी भूमीमां प्रवेश करता अटकाववा माटे मेवाडना दिवान सर सुखदेवप्रसादजीए अगाउथी मेवाडनी चोतरफनी सरहद घेरीने चोवीशे कलाक माटे चोकी पहेरा गोठव्या हता.

संवत १९९० ना फागण सुद १० ना रोज श्री वामणवाडजी तिर्थथी विहार करी अजारी पासे आवेल सरस्वतिना

मंदिरमां एक दिवस वितावि आपणा देवांशी संत पोताना आत्मबळना अद्भूत प्रभावे फागण सुद तेरसना बपोरे उदेपुर नजीक आवेल गाम सदारमां पधारी गया. पोलीस ओफीसरो आ दिव्य घटना निरखी दीगमूढ बनी गया अने वायुवेगे मेवाडनी चोतरफ आ समाचार फरी वळ्या.

मेवाडनी हदमां दाखल थतां फागण सुद तेरसना अगाउ बे जैन साधुने रोकवामां आवेला. परंतु तेओनु नाम शांतिविजयजी नथी, एवी चोकस खात्री थया बाद तेओने आगळ विचरवा देवामां आवेला.

आपणा देवांशी संते संवत १९९० ना फागण सुद चौदशथी उपवासनी शरुआत करी. उपवासना बे दिवस पसार थतां दिवान सुखदेवप्रसादजी अने अन्य ओफीसरो सदार मुकामे तेओश्रीना दर्शनार्थे पधार्या. ते समये दिवानने तेओश्रीए हाकल करी के "मारा माटे आपे त्रण दिवस सुधी पोलीस विगेरेने महान तकलीफ आपी, अने आपे पण अति कष्ट सहन कर्यु. अत्यारे हुं आप समक्ष बेठो छुं. आप मने पकडी जेलमां पुरी शको छो. दिवानजी! वाळ सफेद थई गया छे. मृत्यु आसपास भमी रह्युं छे. टुंक समयनाज आ जगतना महेमान छो माटे सत्यने ओळखतां शीखो." दिवानजीनु मृत्यु टुंक समयमां छे आ हकीकत प्रथम जाहेर पेपरोमां प्रसिद्ध थई चूकी हती.

દિવાનજી આ હકીકત શ્રવણ કરી સ્તબ્ધ બન્યા અને કેટલોક ટાઇમ વિતાવ્યા બાદ આ બાબતમાં શાંતિ સ્થાપન કરવાની પોતાની ઈચ્છા વ્યક્ત કરી અને ત્યાં સુધીને માટે તેઓશ્રીને છાશ ઉપર રહેવા સારુ પ્રાર્થના કરી.

હઠવાદને નહિ પકડતાં દિવાનના વચનને માન્ય કરી આપણા દેવાંશી સંતે છાસ લેવા નિયત કર્યું પરંતુ બે દિવસ પુરા થતાં દિવાનના વચન ઉપરનો વિશ્વાસ અયોગ્ય ભાસવાથી ફરી ઉપવાસની શરુઆત કરી.

મદાર ગામમાં સોએક ઘરની વસ્તી ભાગ્યેજ હશે તે મદાર ગામ તે સમયે એક વિરાટ નગર બની ગયું હતું, કે જ્યાં મેવાડનો માનવસમુહ આપણા દેવાંશી સંતના દર્શનાર્થે હજારોની સંખ્યામાં ઉલટયો હતો. ત્યાં અસંખ્ય માનવોને આપણા દેવાંશી સંત મદ્યપાન આદિનો ત્યાગ કરાવી પાવન બનાવતા હતા ઉપવાસ ચાલુ હોવા છતાં સવારથી સાંજ સુધી હરેક માનવને તેઓશ્રી દર્શન આપતા અને જનતાને પુન્ય પંથે દોરતા.

મદાર ગામમાં વરધીચંદજી તલેસરા નામના એક જૈન ગૃહસ્થની નાની ઝુંપડીના મેડા ઉપર આપણા દેવાંશી સંત વિરાજતા હતા, કે જ્યાં નીચેના ભાગમાં ઢોરો બાંધવામાં આવતાં હતાં. એ જૈન ગૃહસ્થનાં પણ પૂર્ણ સદ્ભાગ્ય કહેવાય કે આપણા દેવાંશી સંતનાં પુનીત પગલાં તેની ઝુંપડીમાં થયાં.

संवत १९९० ना चैत्र सुद तेरसना रोज [illegible] आपणा देवांशी संत आत्मबळना अद्भुत प्रभावे उदेपुरनी नजीक आवेल गाम देवाळीना पादरे पधारी गया

मेवाडना महाराणाश्री भोपाळसिंहजीने पण दिव्य संकेत थयो के ते दिवसे राजमहेलमां खीर करावी पोते साथे लई आपणा देवांशी संतना दर्शनार्थे देवाळी मुकामे पधार्या. देवाळी गाममां महाराणाश्रीनो मोति महेल आवेलो छे, तेने अगाउथी साफ करावबामां आव्यो हतो. त्यां पण हजारोना प्रमाणमां मानवमेदनी उलटी पडी. अति धामधूम अने जय जयना भेदी गुंजार थतां आपणा देवांशी संत मोति महेलमां पधार्या!

श्री भोपालसिंहजी महाराणाए चरणमां शीष झुकाव्युं अने पारणु करवानी पोतानी आंत्रिक विनंति प्रदर्शीत करी. आपणा देवांशी संते पण एटलीज हाकल करी के "हे सूर्य-वंशी महाराणा आप सत्यना पंथे चालो एटलुज मारु कथन छे. जैनोनो हुं पक्ष करतो नथी तेमज वैष्णवो प्रत्ये मारे विरोध नथी." संतनी भावनाओ तो सदाने माटे विश्वना कल्याण-मयज होय छे. केवळ शांति स्थापन करवी एज तेओनो मुख्य उपदेश होय छे.

मेवाडना महाराणाश्री भोपालसिंहजीए पण सूर्यवंशी महाराणा तरीके शांति स्थापवा वचन आप्युं. अने पोताना

स्वहस्ते मोती महेलमां आपणा देवांशी संतने पारणु कराव्युं. आ समयनी दैविकता केटली बधी अपूर्व हशे के जेनु वर्णन आ स्थळे करी शकाय तेम नथी. देवालीथी अति धामधूम साथे आपणा देवांशी संत उदेपुरमां पधार्या.

दिव्य मास अंतर थयो, भोपालसिंह महाराय.
गुरुवरना चरणे पडी, अंतरमां हरखाय.
वचन दीधुं गुरुदेवने, सूर्य वंशी महाराय.
मोती महेलमां पारणु, महाराणाथी थाय.
त्रीस उपवास पुरा कर्या, आनंद त्यां वर्ताय.
शांति सूरी गुरु देवना, सकळ लोक गुण गाय.

जैनोना इतिहासमां छेल्ला केटलाक सैकाओमां आ प्रथमज प्रसंग छे के एक जैन साधुने सूर्यवंशी महाराणा पोताना स्वहस्ते पारणु करावे.

मेवाडना महाराणा तरफथी पण एवुं जाहेरनामु प्रसिद्ध करवामां आव्युं के श्री केसरीयाजी तिर्थमां जैनो सिवाय बीजा कोइनो स्वतंत्र हक नथी.

उदेपुर मुकामे नेपाळना महाराणा आपणा देवांशी संतना दर्शनार्थे पधार्या हता अने तेमणे नेपाळ राज्य धर्मगुरुनु बिरुद अर्पण कर्यु हतुं.

श्री शत्रुंजय तिर्थक्षेत्रना संबंधमां पण ज्यारे पालीताणा स्टेट अने आणंदजी कल्याणजीनी पेढी वच्चे मुडकावेरा विषे

उग्र कलहाग्नि उपस्थित थयो हतो ते समये पण आपणा देवांशी संते शांतिसुधा रेलाववा जहेमत उठावी हती.

मारा श्रवण मुजब एक वखत आ गीरीराजनी पवित्र तिर्थभूमीमां पालीताणा, मोरवी तथा लींमडीना नरेन्द्रो आपणा देवांशी संतना दर्शनार्थे पधार्या हता. त्रणे राजवीओ समक्ष प्रस्तुत घटनानु निराकरण शांतिभावे थतु हतुं अने पालीताणाना ठाकोर साहेब आपणा देवांशी संतनी आज्ञानुसार वर्तवा तैयार हता. आणंदजी कल्याणजीनी पेढीने श्रीमान गुलाबचंदजी ढढ्ढा साहेबे प्रस्तुत संदेशो पाठवेलो परंतु ते समयना समाजना सुभटो अने कीर्तिपालक किल्लेदारोनी कीर्तिमां लेशमात्र उणप ना आवे ते सारु सर्व हकीकत पडदा पाछळ ढंकाइ गइ हती. बीजा केटलाक प्रसंगोए पण आपणा देवांशी संते पोताथी बनतुं सर्व करेलुं छे.

समाज आ घटनाथी अजाण न रहे माटेज आटला टुंक उद्गारो आ स्थळे आलेखु छुं.

उदेपुरना आंगणे केटलोक समय निर्गमन करी असंख्य मानवोने सत्य अने विश्वप्रेमनी सरितामां पावन करता करता श्री केसरीयाजी तिर्थभूमिमां विचरी गामोगाम फरतां फरतां आपणा देवांशी संत श्रीबामणवाडजीना रमणीय तिर्थक्षेत्रमां पधारी गया.



मंगल महोत्सव

धन्य मांडोली गामनां अति पुन्य कहेवाय
सो घर केरा म्हाडगां उत्सव भारे थाय
लक्ष रूपैयो वापर्यो भक्ति तणो नहि पार
अनुपम रचना आदरी शोभा दिव्य अपार
दिव्य दीपक झळक्यो अहीं मणीमयरुपदेखाय
नगर मांडोली गाममां अमृत जळ वरसाय
किंकर कहे आ शुं वन्युं मुखे न वर्णन थाय
कृपा पुरण गुरुदेवनी पार कदी न पमाय

श्री मांडोली नगर ए दादागुरुश्री धर्मविजयजी महाराज के जेओश्रीनो अद्भुत उजवळ जीवन इतिहास हुं आगळ आलेखी गयो छुं तेओश्रीनु जन्म अने काळधर्म पाम्यानु स्थान छे. मांडोली गाममां दादागुरुनी प्रतिमा स्थापन करवाने गामनो मानवसमुह वर्षो थयां स्वप्न सेवतो हतो. संवत १९९४ना फागण मासमां दादागुरुनी प्रतिमा स्थापन करवा माटे अंजनशलाका तथा प्रतिष्ठा महोत्सवनो कार्यक्रम नियत करवा पंचो आपणा देवांशी संत समक्ष आबु गीरीराजमां देलवारानी पवित्र तिर्थभूमिमां आव्या अने अपूर्व भावना

साथे पोतानी विनंति रजु करी. मांडोली गयाने घणो समय वितान्या बाद आ प्राथमिक प्रसंग होवाथी गमे तेम येन केन प्रकारे पधारवानो आग्रह प्रदर्शित कर्यो. अने अंजनशलाका प्रतिष्ठा आदिना शुभ मुहुर्तो दर्शावना सुचव्युं.

मांडोलीना पंचोनी विनंतिनो स्विकार कर्या सिवाय आ प्रसंगे चाले तेम न हतुं. संयोगोने लक्षमां लइ आपणा चेनांगी संते अंजनशलाका अने प्रतिष्ठा आदिना मुहुर्तो दर्शाव्यां अने मांडोली मुकामे विचरवानो आदेश जाहेर कर्यो.

आ शुभ प्रसंगोने उज्वळ बनाववा मांडोली गामना पंचोए अविरत जहेमत उठावी हती. गामसां बे तडो हतां ते पण आ शुभ अवसरे एकत्र थइ सर्व कार्यपरायणतामां गुंथाया हता. पंच पहाडोनी रचना, अठ्ठाइ महोत्सव, शांति स्नात्र, दादागुरुनी प्रतिमाजी तथा श्री सुमतिनाथ प्रभुनी प्रतिमाजीनी अंजनशलाका अने प्रतिष्ठा आदि शुभ कार्यो उजववानी तमन्नामां रात्री अने दिवस मांडोली गामना पंचो झझुम्या हता.

पाल, रावटी, हस्ति, दिपकरोशनी, वाजींत्रो आदिनी अजायब गोठवणो करतां एक लाख रुपीया जेवी मोटी रकमनो व्यय करवानी उर्मिओ वितावतो मांडोलीनो मानवसमुह भावपूर्ण हर्षघेलो बन्यो हतो.

संवत १९९४ ना फागण सुद बीजथी महोत्सवना प्रारंभनी शरुआत थइ. आसपासना गामोमांथी स्वयंसेवकोना दळो अने

हजारोना प्रमाणमां मानवमेदनी उभरावा लागी. ऊंट, गाडां आदिनी एटली बधी लांबी हार थती के माइल सुधी तेनो घेरावो दीसतो.

मांडोली गामनी चारे दिशाए नोबतोना गुंजारो अने वाजींत्रोना गगनभेदी नादो मानवना हृदय मंदिरमां हर्षना तान पुरता दैविक्तानो भास अर्पता हता. मांडोली गाममां आपणा देवांशी संत वर्षों बाद पधारता होइ आजुबाजुना गामो तथा रजवाडाओमां उत्साहनो पार न हतो. मांडोली गाम आ समये एक विराट नगर बन्युं हतुं. असंख्य मानवमेदनीनां जुथ एना आंगणे उतरी पड्यां हतां.

आपणा देवांशी संत फागण सुद सातमना प्रभाते असंख्य मानवमेदनीना सांनिध्यमां हस्ति, वाजींत्रो साथे सुसजीत अद्वैत वरघोडानी मनोरम्यता निरखतां श्री मांडोली नगरमां प्रवेश्या. मानवमेदनी एटली बधी उल्टी हती के सूर्यनारायणनो प्रकाश पण निरखी शकातो न हतो.

फागण सुदी नोमना रोज विविध प्रकारनी पुजाओ साथे अंजनशलाकानी विधी पूर्ण थतां दशमनो शुभ दिवस आवी पहोंच्यो. आजरोज श्री दादागुरु तथा श्री सुमतिनाथ भगवान-नी प्रतिमाजीनी प्रतिष्ठा करवानी हती. आजना प्रभाते एक लाख उपरनी मानवमेदनी उभरातां अद्वैत प्रतिभा अने दैविक सुरो गाजतां फागण सुद दशमना चढता पहोरे आपणा देवांशी

संतना शुभ हस्ते चैत्र प्रतिष्ठाओ [illegible]
द्रव्य एटलुं अलौकिक हतु [illegible]
उभराणी हती. मांडोली गामना [illegible]
जळधारानी माफक लक्ष्मी [illegible]
साथे विताव्या हता.

सुशोभीततानो [illegible] आव्यो हतो के जेनां दैविक [illegible] वानो आ स्थळे समय नथी.

महान पुरुषोनी गति अकळ होय छे के [illegible] होय ते बनी जाय अने कल्पनामां पण [illegible] दिव्यता निरखी शकाय. श्री मांडोली नगरनो [illegible] अकळ गतिनु भान करावतो हतो. आपणा [illegible] संतनी शुभाशिषनुज आ एक दिव्य स्वप्न बनी गयुं एम आलेखवुं जराए अतिशयोक्ति भरेलुं नहि मनाय.

आ प्रसंगने लगती विशिष्ठता दर्शावतां, ते प्रसंगे "श्रीमद् गुरुमंदीर महोत्सव प्रसंगे" तथा "श्री मांडोली नगर अने मंगल महोत्सव" नामनां बे पुष्प प्रसिद्ध करेलां हतां.

मांडोली नगरमां आठ मासनो काळ आनंद अने हर्ष समृद्धिमां निर्गमन करी, उमेदपुर प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे अडतालीस गामना पंचोनी विनंतिनो स्विकार करी सं. १९९५ ना मागसर सुद त्रीजना मध्यान्हे जनसमुहनी भावभीनी विदाय लइ आपणा देवांशी संते शियाणा गाम तरफ विहार कर्यो.

विहार

शांति शांति का झंडा जगतमें फीरे
सारी दुनियामे रोशन उनीका जले
भक्ति करनेसे भवभयके संकट टळे
कोइ क्रिष्ना भजे कोइ रामा भजे
भेद्भावो भींतरसे वीराओ तजे
भक्ति श्रद्धा विना नाथ कैसे रीझे

शियाणा गाममां एक दिवस विताव्रि जन्मभूमि मणादर तरफ विहार करवानु नियत थयुं. आठ वर्षनी वये गाम मणादर छोड्या बाद मणादरनी भूमिमां प्रवेश करवानो आ प्रथम प्रसंग हतो. माता तथा मणादरना मानवसमुहने पोतानी भावना पूर्ण करवानी आ अणधारी तक मळवाथी तेओ सर्वना हर्षनो पार न हतो. मागसर सुद छठ्ठना रोज मणादरना मानवसमुहना अति धामधूम भर्या सामैयानो स्वीकार करी आपणा देवांशी संत मणादर नगरमां प्रवेश्या.

मणादरना ठाकोर साहेब मानसिंहजीना कुंवर पण ते समये दर्शनार्थे पधार्या, अने शीष झूकाव्युं. माताना अति उत्साहनो स्वीकार करी जन्मस्थळमां प्रवेशी मातानी हार्दीक

भावनाने शांतवन करी. मणादरनगरमां फळेसुनगीनो मोटो जमणवार करवामां आव्यो हतो. फळेसुनगी एटले गामनी पादरे एक चुंदडी फरकाववामां आवे अने ते फरकती रहे त्यां सुधीमां मनुष्य मात्र त्यां आवीने जमे.

मणादरनगरमां बे दिवस पसार करी मागसर सुद सातमना रोज हरजी गाम पधार्या. त्यां आचार्य श्री विजयललितसूरिजी आपणा देवांशी संतने उमेदपुरना प्रतिष्ठा महोत्सवना प्रसंगे पधारवा विनंति करवा सारु आव्या हता. हरजीमां एक दिवस वितावि मागसर सुद नोमना रोज उमेदपुर तरफ विहार कर्यो.

मागसर सुद नोमना रोज बपोरना त्रण वागे असंख्य मानवमेदनी तथा आचार्य श्री विजयललितसूरीजी अने अन्य साधुओ साथेनु वाजींत्रो अने जयजयना गगनभेदी गुंजारो करतुं भव्य सामैयुं उमेदपुरनी पादरे आवी पहोंच्युं. सामैयानो स्वीकार करी आपणा देवांशी संत गाममां प्रवेश्या.

उमेदपुरना अमीझरा पार्श्वनाथनी जे प्रतिमाजीनी प्रतिष्ठा करवानी हती तेनी अंजनशलाका बामणवाडजी मुकामे संवत १९९९ ना महासुद पांचमना रोज आपणा देवांशी संतना शुभ हस्ते करवामां आवी हती. ते समये श्याम प्रतिमाजी उपर सफेद डाघ हता ते माटे आशिर्वाद आप्यो हतो के ए साफ थई जशे. ते तमाम घटना दिव्यपणे यशस्वी बनी हती.

संवत १९९५ ना मागसर सुदी दशमना रोज श्री उमेदपुरण अमीझरा पार्श्वनाथनी प्रतिमाजीनी प्रतिष्ठा आपणा देवांशी संतना शुभ हस्ते थतां जयजयकार वर्तायो. अने असंख्य मानवमेदनी आनंदधारा वर्षावतां विखरावा मांडी.

मागसर सुद तेरसना रोज उमेदपुरथी विहार करी पादरली गाम आव्या अने त्यां एक दिवस वितावी तखतगढ पधार्या. त्यां त्रण दिवस रही कन्याविक्रयनो कुरीवाज बंध करावी मागसर वद त्रीजना रोज विहार कर्यो.

रस्तामां भील लोकोनु वीठीआ गाम आवे छे त्यां वीरनु एक मंदिर छे. ते मंदिरनो भूवो भोपाना नामथी ओळखाय छे. प्रस्तुत मंदिरमां घणाज पशुओनी हिंसा थती हती ते आपणा देवांशी संतना दिव्य प्रभावथी बंध थइ. आ सबंधमां विशेष आलेखन पाना नं. ७८ उपर आवी गयुं छे.

आपणा देवांशी संत त्रीजनी सांजे वांकली गाममां पधार्या त्यां त्रण दिवस रही छठ्ठना रोज खीवाणदी गाममां पधार्या. ते गाममां सीत्तेर वर्षथी कलह चाल्यो आवतो हतो ते शान्त्वन कर्यो अने आठ दिवस सुधी भक्तिनां पान वर्षावी तेरसना रोज पोमावा तरफ विहार कर्यो.

पोमावा गाममां आपणा देवांशी संत अढार वर्षे पधार्या अने त्यांना जीनालयमां पोष सुद छठ्ठना रोज श्री कुंथुनाथ

प्रभुनी प्रतिमाजीनी स्थापना तथा शांतिस्नात्र आदि शुभकार्य करावी आनंद वर्तावी नोमना रोज विहार करवानु नियत थयुं.

सुमेरपुर अने शिवगंज बन्ने नजीक आवतां होइ बन्ने गामवाळाओनी एक सरखीज भावना हती परंतु एवुं नक्की कर्युं के जे दिशामां शुकन आवे ते तरफ विहार करवो. पोमावा गामनी भावभीनी विदाय लइ पोष सुद नोमना रोज शिवगंज तरफना सुकन थवाथी आपणा देवांशी संते ते तरफ विहार कर्यो. रस्तामां आवता गामोना मानवसमुहने भक्ति अने विश्वप्रेमना पानथी पावन बनावता सांजे शिवगंज आवी पहोंच्या.

सूर्य अस्त थवानी तैयारी होवाथी हंसाजी चुनीलाल नामना एक सुंगानी दुकानमां रातवासो रह्या. प्रभातमां अपूर्व धामधूम अने उत्साहना झरण वर्षावतां दबदबा भर्या सामैयानो स्वीकार करी नगरमां प्रवेश्या. आखा ए नगरने ध्वजापताका अने सुशोभित रंग बेरंगी दरवाजाओथी शणगारवामां आव्युं हतुं. जनसमुहना उत्साहनी सीमा अपूर्व हती. शिरोही प्रदेशमां शिवगंजनी प्रतिभा कीर्तिवंत मनाय छे.

शिवगंज नगरमां दोढ मासनो काळ भक्ति अने प्रेमनां झरण वर्षावतां दरम्यानमां पडोशमां आवेल गाम बडगाममां पधारी आठ दिवसनो काळ निर्गमन करतां लांबा वर्षोनो भिषण कलह शान्त्वन करी आपस आपसमां सुलेहशांति

स्थापी स्नेहनो सिंधु रेलाव्यो. एक दिवस सुमेरपुरमां पधारी त्यां पण आनंद अने स्नेहसमृद्धिनां झरण व्रषाव्यां.

फागण सुद तेरशना रोज शिवगंज नगरथी विहार करी कळापरा, नीलकंठ आदि गामोमां विहार करता गाम चुलीमां पधार्या. चुली पासे राडबढ गाम आवेलुं छे; ज्यां भगवान श्री महावीर स्वामीनु पुराणु अने अलौकिक जीवत स्वामी मंदिर आवेलुं छे. त्यां हरेक साल चैत्र सुदी पुर्णिमाए मेळो भरातो हतो; परंतु छेल्ला केटलाक वर्षो थयां बंध हतो ते मेळो फरीथी भरवानो शरु करावी दोढ मासनो समय चुलीमां भक्तिसुधा रेलावतां निर्गमन करी विहार करतां अठवारा पधार्या. अठवारामां आठ दिवस आनंदमंगळमां वितावि साठ वर्षना जुना कलहने शान्त्वन करी स्नेहनां झरणा व्रषाव्यां.

अठवाराथी पोषाळीया, भेव, पालडी. वागण शिरोही गोहीली पाडिव खांभल इत्यादी गामोमां विचरता विचरता संवत १९९५ ना वैशाख सुद छट्ठनी मंगळ प्रभाते अणादरा पधार्या. त्यां संप्रतिराजाए बंधावेला प्राचीन जीनालयमां वैशाख सुद सातमना रोज प्रतिष्ठा महोत्सव आदि शुभ कार्यने आनंद मंगळ साथे वितावी स्थिरवास रह्या. आ चोमासामां दुष्काळ प्रवर्ततो होवा छतां पण अणादरा अने तेनी आसपासनी भूमिमां सारो वरसाद थयेलो.

સુવર્ણ મહોત્સવ

સંવત ૧૯૯૬ ના મહાસુદ પાંચમના રોજ આપણા દેવાંશી સંતને પચાશ વર્ષ પુરાં થતાં હોઇ, અપૂર્વ ઉત્સાહ રેલાવતાં અણાદરા ગામે સુવર્ણ મહોત્સવ ઉજવવામાં આવ્યો હતો. તે સમયે પણ અણાદરા ગામડુ મટીને વિરાટ નગર સમુ દિસતુ હતું.

સંવત ૧૯૯૬ ના અષાડ સુદી તેરસના રોજ અનાદરાના ઠાકોર સાહેબ તથા માનવસમુહની ભાવભીની વિદાય લઇ આપણા દેવાંશી સંત વિહાર કરી પવિત્ર તિર્થાધિરાજ આબુગિરિ ઉપર પધારી ગયા.

આપણા દેવાંશી સંત વિહાર કરતાં જે જે ગામમાં વિચર્યા હતા ત્યાં તે તે સમયની દૈવિકતા નિહાળતાં જાણે પરમાત્મા પોતેજ સદેહે પધારતા હોય તેવીજ ભાવનાઓ લૂંટતાં જનમણવારો સાથે અપૂર્વ ભક્તિસુધા રેલાતી.

આજે પણ આપણા દેવાંશી સંત અર્બુદગીરીરાજના ગગન-ચુંબી શિખરો અને અરણ્યોમાં નિજાનંદ લૂંટતાં આત્મજ્યોતિનો દિવ્ય પ્રકાશ વિશ્વભરમાં ફેલાવી રહ્યા છે.

અન્ય માનવોના વક્તૃત્વમાં નહિ ભરમાતાં, માનવસમુહ મારા આટલા જુજ નિવેદનનો સ્વીકાર કરી કેવળ સત્યનો પુજારી બને એટલીજ અભ્યર્થના સાથે મારી ઉર્મિઓને વિરામુ છું.

गुरुस्तोत्र

(हरीगीत)

जीवननैयां तारनारा एकश्री गुरुदेव छे
सिंधुमांथी काढनारा एकश्री गुरुदेव छे
रोग शोग निवारनारा एकश्री गुरुदेव छे
विषम हैयां ठारनारा एकश्री गुरुदेव छे

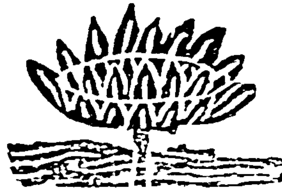
कर्मज्वाळामां हिमालय एकश्री गुरुदेव छे
शांतिनु साचु शिवालय एकश्री गुरुदेव छे
कल्पवृक्ष अने कृपामय एकश्री गुरुदेव छे
जाप जपवानु जीनालय एकश्री गुरुदेव छे

जंझटोने टाळनारा एकश्री गुरुदेव छे
पतितने पण पाळनारा एकश्री गुरुदेव छे
दिव्यज्योत जलावनारा एकश्री गुरुदेव छे
अभयसुखने आपनारा एकश्री गुरुदेव छे

भाग्यनो तपतो सितारो एकश्री गुरुदेव छे
मुक्तिनो मोंघो मिनारो एकश्री गुरुदेव छे
ज्ञानगंगानो किनारो एकश्री गुरुदेव छे
विश्वप्रेम तणो फुवारो एकश्री गुरुदेव छे

क्षमाजळ रेलावनारा एकश्री गुरुदेव छे
सत्यपाठ शिखावनारा एकश्री गुरुदेव छे
किंकर कहे मुजमंदिरे पण एकश्री गुरुदेव छे
अमर पंथे लइ जनारा एकश्री गुरुदेव छे

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः



किंकरना भक्ति पुष्पोनु भक्तिरसना झरणां वर्षावतुं
एकवीसमु पुष्प
"हृदयनी छोळो" टुंक समयमां बहार पडशे.

: मुद्रक :
शा [illegible] सांकळचंद
[illegible] प्रि. प्रेस
[illegible] अमदावाद

: प्रकाशक :
शा पुरुषोत्तमदास पोपटलाल
फतासानी पोळ, नवि पोळ
अमदावाद.